सामाजिक शोध का अर्थ एवं प्रकृति
(Meaning and Nature of Social Research)

सामाजिक अनुसन्धान का परिचय
(Introduction of Social Research)

अनुसन्धान (शोध) शब्द अंग्रेजी के Research शब्द का हिन्दी रूपान्तर है जिसे दो भागों Re तथा Search में विभाजित किया जा सकता है। Re शब्द का अर्थ है पुनः जबकि **Search** का अर्थ है **खोज करना**। अतः अनुसन्धान का शाब्दिक अर्थ **पुनः खोज करना** है।

शोध का प्रयोजन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है। वैज्ञानिक प्रणाली इसलिए प्रयुक्त की जाती है जिससे एकत्र किए गए तथ्य या सूचनाएँ विश्वसनीय, पक्षपात रहित एवं तर्क संगत हों, अनुसन्धान की प्रक्रिया निष्पक्ष एवं विश्वसनीय ढंग से सम्बद्ध तथा तर्कसंगत ज्ञान की खोज पर ही बल नहीं देती, बल्कि पूर्व स्थापित तथ्यों एवं निष्कर्षों का सत्यापन भी अनुसन्धान का लक्ष्य है। जब इस प्रक्रिया द्वारा हम सामाजिक घटनाओं से सम्बद्ध प्रश्नों का हल ढूँढ़ते हैं, तब मोटे तौर पर उसे सामाजिक शोध कह सकते हैं।

इस तरह सामाजिक घटनाओं को समझने, उनके सत्यापन एवं परिमार्जन तथा सैद्धान्तिक विश्लेषण के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग ही सामाजिक अनुसन्धान है।

मनुष्य सदैव अपने चारों ओर के वातावरण के बारे में अधिक-से-अधिक जानने के लिए प्रयत्नशील रहता है। मनुष्य की यही जिज्ञासु प्रवृत्ति ही अनुसन्धान का मूल आधार है।

सामाजिक अनुसन्धान की परिभाषाएँ

- **पी वी यंग** के अनुसार, ''सामाजिक अनुसन्धान नवीन तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों का सत्यापन, उनके क्रमबद्ध पारस्परिक सम्बन्धों, कारणों की व्याख्या तथा उन्हें संचालित करने वाले प्राकृतिक नियमों के अध्ययन की सुनियोजित पद्धति है।
- **रैडमैन** एवं **मोरी** के अनुसार, ''नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के क्रमबद्ध प्रयास को हम अनुसन्धान (शोध) कह सकते हैं।
- **ह्विटने** के अनुसार, ''समाजशास्त्रीय अनुसन्धान के अन्तर्गत मानव समूह के सम्बन्धों का अध्ययन होता है।
- **बोगार्ड्स** के अनुसार, ''एक साथ रहने वाले लोगों के जीवन में क्रियाशील अन्तर्निहित प्रक्रियाओं की खोज ही सामाजिक अनुसन्धान है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि

(i) सामाजिक अनुसन्धान मुख्यतः वैज्ञानिक पद्धति द्वारा किया गया अध्ययन है।

(ii) वैज्ञानिक पद्धति के कारण प्राप्त तथ्य एवं निष्कर्ष तर्कसम्मत, विश्वसनीय एवं पक्षपातरहित होते हैं यद्यपि यह हमेशा सत्य भी नहीं हो सकता है।

Scanned with CamScanner

(iii) इसका सम्बन्ध सामाजिक घटनाक्रम, मानव व्यवहार या सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों से है।

(iv) इससे नवीन तथ्यों की खोज एवं पुराने निष्कर्षों का पुन: परीक्षण एवं सत्यापन किया जाता है।

सामाजिक अनुसन्धान की प्रकृति

सामाजिक अनुसन्धान में सामाजिक तथ्यों से सम्बद्ध प्रश्नों या समस्याओं का वैज्ञानिक विधि द्वारा विश्वसनीय हल प्राप्त किया जाता है। इस दृष्टि से सामाजिक अनुसन्धान की प्रकृति वैज्ञानिक है। इसके द्वारा वैज्ञानिक विधि के माध्यम से सामाजिक जीवन का अध्ययन, विश्लेषण एवं प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। इसकी प्रकृति यह भी स्पष्ट करती है कि यह केवल नवीन तथ्यों की खोज तक ही अपने को सीमित नहीं रखता, बल्कि पुराने तथ्यों एवं घटनाओं के सम्बन्ध में भी ज्ञान प्राप्त करने के लिए सामाजिक अनुसन्धान किया जाता है।

सामाजिक अनुसन्धान की प्रकृति निम्नांकित तथ्यों द्वारा स्पष्ट की जा सकती है

(i) सामाजिक सम्बन्धों, घटनाओं, तथ्यों व प्रक्रियाओं की व्याख्या करना

(ii) सामाजिक सम्बन्धों के बारे में नवीन तथ्यों की खोज करना

(iii) सामाजिक समस्याओं की प्रकृति एवं कारणों का अध्ययन करना

(iv) वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग

(v) प्राचीन तथ्यों का पुनर्परीक्षण व सुधार करना

(vi) सांख्यिकी विश्लेषण का प्रयोग

(vii) तथ्यों व प्रमाणों का विश्लेषण और विवेचन

इस प्रकार सामाजिक अनुसन्धान में सत्य की खोज तथ्यों पर आधारित रहती है। पहले उपकल्पना का निर्माण किया जाता है फिर अनुसन्धान यन्त्रों का चुनाव करके तथ्यों का अवलोकन तथा संकलन किया जाता है। इसके उपरान्त सामग्री का विवेचन करके समस्या से सम्बन्धित नियमों, उपनियमों का निर्धारण किया जाता है। सामाजिक जीवन में परिवर्तन होते रहते हैं। अत: सामाजिक अनुसन्धान द्वारा नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती रहती है। इसलिए अवलोकन तथा कार्य-कारण सम्बन्ध वैज्ञानिकता के मूल तत्त्व हैं। अत: सामाजिक अनुसन्धान की प्रकृति वैज्ञानिक है और सामाजिक अनुसन्धान विज्ञान है।

सामाजिक शोध के उद्देश्य

सामाजिक शोध सामाजिक वास्तविकता से सम्बन्धित है। अत: इसका उद्देश्य सामाजिक वास्तविकता को यथासम्भव वस्तुनिष्ठ एवं क्रमबद्ध रूप से समझना है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नहीं है अपितु ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में पाई जाने वाली समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग में लाना भी है। वस्तुत: किसी भी अनुसन्धान का मौलिक उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि है। *इस उद्देश्य को दो वर्गों में बाँट सकते हैं।*

(i) शैक्षणिक या सैद्धान्तिक उद्देश्य

(ii) व्यावहारिक उद्देश्य

पुन: सैद्धान्तिक या वैज्ञानिक उद्देश्य को चार उपविभागों में बाँटा जा सकता है

(i) सामाजिक जीवन व घटनाओं के बारे में ज्ञान

(ii) सामाजिक घटनाओं में पाए जाने वाले प्रकार्यात्मक सम्बन्धों का ज्ञान

(iii) सामाजिक घटनाओं में अन्तर्निहित स्वाभाविक नियमों को ढूँढ निकालना

(iv) प्रयोगसिद्ध तथ्यों के आधार पर वैज्ञानिक अवधारणाओं का निर्माण

इसी प्रकार **व्यावहारिक उद्देश्य** को भी चार उपविभागों में बाँटा जा सकता है

(i) सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में सहायता प्रदान करना

(ii) सामाजिक नियन्त्रण में सहायता

(iii) सामाजिक योजनाओं को बनाने में सहायक

(iv) सामाजिक संघर्षों की स्थिति दूर करने में सहायक

सामाजिक अनुसन्धान की मुख्य विशेषताएँ

1. सामाजिक अनुसन्धान एक वैज्ञानिक योजना है जो तार्किक व क्रमबद्ध पद्धतियों पर आधारित है।
2. यह सामाजिक जीवन की घटनाओं से सम्बन्धित है। यह मानव की भावनाओं, प्रवृत्तियों, व्यवहार आदि की खोज करता है।
3. सामाजिक शोध के मुख्य रूप से दो उद्देश्य होते हैं
   (i) नवीन तथ्यों का पता लगाना और
   (ii) प्राप्त ज्ञान या पुराने तथ्यों का सत्यापन करना।
4. यह विभिन्न तथ्यों के मध्य सम्बन्धों का अन्वेषण करता है।
5. भविष्य में होने वाली सामाजिक घटनाओं की अनुमानित जानकारी प्रदान करता है।
6. यह इस बात पर बल देता है कि भौतिक घटनाओं की भाँति ही सामाजिक घटनाएँ भी निश्चित नियमों द्वारा संचालित होती हैं।

सामाजिक अनुसन्धान का महत्त्व

सामाजिक शोध या अनुसन्धान आज के युग में दैनिक जीवन का एक अंग बन गया है क्योंकि सामाजिक जीवन अत्यधिक जटिल होता जा रहा है। इसमें धन एवं समय दोनों ही लगते हैं परन्तु फिर भी अधिक-से-अधिक लोग शोध कार्यों में रुचि लेने लगे हैं। इसके महत्त्व निम्न हैं

(i) ज्ञान के विकास में सहायक

(ii) अज्ञानता और अन्धविश्वास को मिटाने में सहायक

(iii) समाज के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायक

(iv) सामाजिक कल्याण में सहायक

(v) भविष्यवाणी करने में सहायक

(vi) सामाजिक नियन्त्रण में सहायक

(vii) सामाजिक समस्याओं के निष्पक्ष विश्लेषण में सहायक

सामाजिक अनुसन्धान के सोपान (चरण)

सामाजिक अनुसन्धान एक जटिल प्रक्रिया है क्योंकि जब हम शोध की रचना बनाना प्रारम्भ करते हैं तो पता चलता है कि यह कार्य कितना कठिन है। सामाजिक अनुसन्धान में अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो निम्नलिखित हैं

(i) सामाजिक घटनाओं की परिवर्तनशीलता

(ii) दूसरी समस्या निदर्शन के चयन से सम्बन्धित

(iii) समस्या का चयन सदैव मूल्य-निर्णयों द्वारा प्रभावित होता है।

(iv) वस्तुनिष्ठता की समस्या

(v) सामाजिक घटनाओं की गुणात्मक प्रकृति

(vi) सही माप असम्भव

Scanned with CamScanner

सामाजिक अनुसन्धान की समस्याएँ

सामाजिक अनुसन्धान एक अत्यन्त जटिल प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया की अनेक अवस्थाएँ होती हैं। इन्हीं अवस्थाओं को सामाजिक अनुसन्धान के विभिन्न चरण या सोपान कहा जाता है जो निम्नलिखित हैं

(i) समस्या का चुनाव एवं प्रतिपादन
(ii) सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन
(iii) अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण
(iv) सूचनादाताओं का चुनाव
(v) प्राक्कल्पना का निर्माण
(vi) इकाइयों का निर्धारण
(vii) उपकरणों का पूर्व-परीक्षण
(viii) तथ्यों का अवलोकन व संकलन
(ix) सूचना के स्रोतों एवं अध्ययन के उपकरणों व प्रविधियों का निर्धारण
(x) तथ्यों का सम्पादन, संकेतन, वर्गीकरण एवं सारणीयन
(xi) रेखाचित्रों द्वारा तथ्यों का प्रस्तुतीकरण
(xii) तथ्यों का विश्लेषण
(xiii) सामान्यीकरण एवं नियमों का प्रतिपादन

उपरोक्त तथ्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सामाजिक शोध के विभिन्न चरणों को क्रमबद्ध रूप से संचालित किया जाए तो सामाजिक घटनाओं की वास्तविकता वैज्ञानिक रूप से ज्ञात हो जाएगी।

वैज्ञानिक विधि या पद्धति

(The Scientific Method)

वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा प्राप्त किया गया व्यवस्थित ज्ञान ही विज्ञान है। वैज्ञानिक पद्धति से केवल तथ्यों का अध्ययन करके ज्ञान ही नहीं प्राप्त किया जाता बल्कि उन्हें इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है कि उसके परिणाम स्वयं ही स्पष्ट हो सके। इसको समझाते हुए ट्वाइन केयर ने कहा है कि विज्ञान तथ्यों से उसी प्रकार बना है जिस प्रकार पत्थरों से एक मकान। जिस प्रकार पत्थरों के ढेर को मकान नहीं कहा जा सकता उसी प्रकार तथ्यों के संकलन को विज्ञान नहीं कहा जा सकता।

इस बात को बताते हुए **चर्चमैन एवं एकोफ** ने कहा है कि "विज्ञान का अर्थ ज्ञान प्राप्त करने का व्यवस्थित तरीका या कुशल खोज है।"

ऑगस्ट कॉम्टे के अनुसार, "वैज्ञानिक पद्धति में धर्म, दर्शन या परिकल्पना का कोई स्थान नहीं होता और वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ निरीक्षण, परीक्षण प्रयोग एवं वर्गीकरण की एक व्यवस्थित कार्य-प्रणाली से है"। दूसरें शब्दों में वैज्ञानिक पद्धति एक ऐसा वैज्ञानिक तरीका है, जिसके माध्यम से सामाजिक समस्याओं का अध्ययन व्यवस्थित ढंग से किया जाता है और इससे प्राप्त निष्कर्ष सार्वभौमिक एवं सर्वमान्य होते हैं। इसको निम्नलिखित व्यवस्थाओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है

विज्ञान का अर्थ ज्ञान को व्यवस्थित तरीके से प्राप्त करने से है। इसमें अवलोकन द्वारा तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। तथ्यों का वर्गीकरण व विश्लेषण किया जाता है।

इसमें क्या है? का उल्लेख किया जाता है अर्थात् जो वस्तु जिस रूप में दिखाई पड़ रही है उसका अध्ययन उसी रूप में किया जाता है न कि उसके अच्छे या बुरे होने के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किया जाता है।

वैज्ञानिक पद्धति की परिभाषाएँ

- **कार्ल पियर्सन** ने कहा है "समस्त विज्ञान की एकता केवल उसकी पद्धति में है न कि उसकी विषय सामग्री में"।
- **गुडे** एवं **हैट** के अनुसार, "विज्ञान समस्त अनुभव सिद्ध संसार के प्रति दृष्टिकोण की एक पद्धति है"।
- **चेज** के अनुसार, "विज्ञान पद्धति के साथ चलता है, विषय वस्तु के साथ नहीं।"
- **लुण्डबर्ग** के अनुसार, "विस्तृत अर्थ में वैज्ञानिक पद्धति व्यवस्थित अवलोकन, वर्गीकरण एवं निर्वचन है।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि वैज्ञानिक पद्धति से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं

1. कार्य-कारण सम्बन्धों की व्याख्या होती है।
2. सार्वभौमिक सिद्धान्तों की स्थापना की जाती है।
3. इससे प्राप्त निष्कर्ष सार्वभौमिक होते हैं।
4. इसके माध्यम से समाज में आने वाली समस्याओं का निदान व भविष्यवाणी की जा सकती है।
5. इसका अध्ययन वस्तुनिष्ठ प्रकृति का होता है।

निष्कर्ष उपरोक्त निष्कर्ष को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक प्रकार का होता है। इसीलिए **कार्ल पियर्सन** ने कहा है कि "सत्य तक पहुँचने के लिए कोई संक्षिप्त मार्ग नहीं है इसीलिए विश्व का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति के मार्ग से गुजरने के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है "इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि समाजशास्त्रीय अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने के लिए वैज्ञानिक पद्धति और वैज्ञानिक चरणों से गुजरने की आवश्यकता है।

वैज्ञानिक पद्धति के चरण

वैज्ञानिक पद्धति के चरण के विषय में समाजशास्त्रियों में काफी विवाद है। इसके बाद भी यह कहा जा सकता है कि अनुसन्धान का प्रारम्भ किसी समस्या या प्रश्न से होता है। समस्या से सम्बन्धित उपकल्पनाएँ बनाई जाती हैं। आँकड़े, एकत्रित किए जाते हैं। आँकड़ों का वर्गीकरण एवं निरीक्षण कर नियमों एवं सिद्धान्तों को प्रतिपादित करने का प्रयास किया जाता है। इसके निम्नलिखित चरण हैं

(i) समस्या का चुनाव एकोफ का कहना है कि किसी समस्या का ठीक प्रकार से निर्धारण करना इसका आधा समाधान है।
(ii) उपकल्पना या परिकल्पना (सोच निर्मित करना, व्यवस्थित न करना)
(iii) चरों का चयन
(iv) निदर्शन या प्रतिचयन
(v) सामग्री का संकलन
(vi) सामग्री का विश्लेषण
(vii) प्रतिवेदन या रिपोर्ट तैयार करना या निष्कर्ष

Scanned with CamScanner

इसीलिए **बर्नार्ड** ने इसकी परिभाषा की अपेक्षा वैज्ञानिक पद्धति की छः प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है जिसमें परीक्षण, सत्यापन, परिभाषा, वर्गीकरण, संगठन तथा दृष्टिकोण या निष्कर्ष प्रमुख हैं, जिसके माध्यम से वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है।

- **ऑगस्ट कॉम्टे** ने वैज्ञानिक पद्धति के चरणों का विवेचन इस प्रकार किया है
  - (i) विषय का चुनाव
  - (ii) अवलोकन द्वारा तथ्यों का संकलन
  - (iii) तथ्यों का वर्गीकरण
  - (iv) तथ्यों का परीक्षण तथा
  - (v) नियमों का प्रतिपादन
- इसी प्रकार **मोर्स** ने भी वैज्ञानिक पद्धति के निम्नलिखित चरण प्रस्तुत किए हैं
  - (i) उद्देश्य की परिभाषा
  - (ii) अध्ययन की समस्या
  - (iii) अनुसूची में समस्या का विश्लेषण
  - (iv) क्षेत्र का निर्धारण
  - (v) समस्त लिखित स्रोतों का निरीक्षण
  - (vi) क्षेत्रीय कार्य
  - (vii) सामग्री व्यवस्थित करना
  - (viii) परिणामों का विश्लेषण
  - (ix) निष्कर्ष
  - (x) रेखाचित्रों द्वारा तथ्यों का प्रस्तुतीकरण
- **जॉर्ज ए लुण्डबर्ग** ने वैज्ञानिक पद्धति के चार चरण बताए हैं
  - (i) कार्यकारी प्राक्कल्पना
  - (ii) तथ्यों का अवलोकन एवं लेखन
  - (iii) एकत्रित तथ्यों का अवलोकन एवं संगठन
  - (iv) सामान्यीकरण नियमों का प्रतिपादन

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि विज्ञान क्रमबद्ध ज्ञान या किसी तथ्य अथवा प्रघटना से सम्बन्धित वस्तुनिष्ठ रूप से जानकारी प्राप्त करने का एक तरीका है। इसमें अवलोकन, परीक्षा, प्रयोग, वर्गीकरण एवं विश्लेषण द्वारा वास्तविकता को समझने का प्रयास किया जाता है। यह प्रघटना के पीछे छिपे तथ्य या वास्तविकता को प्राप्त करने का एक मार्ग है। ज्ञान की शाखा के रूप में इसमें निश्चितता, सामान्यता तथा कार्य-कारण सम्बन्धों पर बल दिया जाता है। पद्धति के रूप में इसमें वैज्ञानिक विधि के सभी चरणों पर बल दिया जाता है।

वैज्ञानिक पद्धति की विशेषताएँ

विज्ञान क्रमबद्ध ज्ञान तथा तथ्यों एवं प्रघटनाओं को समझने की एक निश्चित पद्धति है *जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ पाई जाती हैं*

1. प्रमाणिकता या सत्यापनशीलता
2. वस्तुनिष्ठता
3. निश्चयात्मकता
4. सामान्यता
5. क्रमबद्धता
6. कार्य-कारण सम्बन्ध
7. पूर्वानुमान
8. सिद्धान्त सार्वभौमिक
9. भविष्यवाणी करने की क्षमता
10. तर्क की प्रधानता

सामाजिक घटक के अध्ययन में समस्याएँ

मनुष्य जब से इस धरा पर आया है उसने अपने को असीम समस्याओं से घिरा हुआ पाया। इन समस्याओं से निजात पाने, वर्तमान को समझने तथा भविष्य को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उसने विभिन्न खोजों को प्रारम्भ किया, और उन्हीं खोजों में एक नए विज्ञान, समाजशास्त्र का जन्म हुआ।

समाजशास्त्र चूँकि सम्बन्धों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है, जोकि अमूर्त एवं जटिल होता है, लेकिन समाजशास्त्रियों ने इसको भी समझने के लिए विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया, लेकिन इसके बाद इसके ऊपर विज्ञान न होने का आरोप लगता रहा क्योंकि सामाजिक घटक या घटना अमूर्त एवं गतिशील होती है साथ ही साथ इसमें एक मानव द्वारा दूसरे मानव का अध्ययन किया जाता है। यदि वह उसके लिंग, जाति, धर्म का है तो उसके प्रति लगाव और यदि नहीं है तो उसके प्रति अलगाव की भावना आ जाती है इसलिए सामाजिक निष्कर्ष सही प्रतिपादित नहीं हो पाते। *इसके अन्तर्गत विभिन्न विधियाँ हैं*

- (i) वस्तुनिष्ठता या उद्देश्यपरकता
- (ii) व्यक्तिनिष्ठता या वैयक्तिकता
- (iii) तथ्य
- (iv) मूल्य

वस्तुनिष्ठता या उद्देश्यपरकता (Objectivity)

सामाजिक अनुसन्धान का उद्देश्य किसी घटना का वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन तथा उसे वास्तविक रूप में समझने से है और यह उद्देश्य तभी सम्भव है जब अनुसन्धानकर्ता किसी घटना के अध्ययन को अपने विचारों से प्रभावित न करे। जब विभिन्न अनुसन्धानकर्ता एक घटना का अध्ययन कर एक सामान्य निष्कर्ष निकालते हैं तो हम उसे वस्तुनिष्ठ अध्ययन कह सकते हैं इसीलिए इसको परिभाषित करते हुए AW ग्रीन ने कहा है कि "निष्पक्षता के साथ घटना का परीक्षण ही वस्तुनिष्ठता है" इसी तरह लावेलकार ने कहा है सत्य की वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह है कि घटनामयी संसार किसी व्यक्ति के विश्वासों व आशाओं अथवा भय से स्वतन्त्र एक वास्तविकता है जिसका ज्ञान हम कल्पना से नहीं बल्कि अवलोकन द्वारा करते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठता घटना का स्वतन्त्र व निष्पक्ष रूप से अध्ययन करने की क्षमता या भावना है जो अनुसन्धानकर्ता को अध्ययन करते समय उसके अपने विश्वासों, आशाओं व भय से दूर रखता है, साथ ही साथ परीक्षण, निरीक्षण व वर्गीकरण पर बल देता है।

कार के अनुसार, "सत्य की वस्तुनिष्ठता से अभिप्राय है कि दृष्टि विषयक जगत किसी व्यक्ति के प्रयासों, आशाओं या भय से स्वतन्त्र एक वास्तविकता है जिसे हम सहज ज्ञान एवं कल्पना से नहीं बल्कि वास्तविकता अवलोकन के द्वारा प्राप्त करते हैं"

फेयरचाइल्ड के अनुसार, "वस्तुनिष्ठता का अर्थ तथ्यों को पक्षपात तथा उद्देश्य के आधार पर नहीं, बल्कि प्रमाण एवं तर्क के आधार पर बिना किसी सुझाव या पूर्व-घटनाओं के, सही पृष्ठभूमि में देखने की योग्यता है।"

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संसार एक वास्तविकता है तथा घटनाएँ किन्हीं सामान्य नियमों द्वारा संचालित होती हैं कार का मत है कि वस्तुनिष्ठता तथ्यों का यथार्थ अवलोकन है जिसमें व्यक्ति के विश्वासों, आशाओं भय एवं कल्पनाओं आदि का कोई स्थान नहीं है। ग्रीन का कहना है कि वस्तुनिष्ठता सामग्री संग्रह करने का साधन नहीं है बल्कि यह शोधकर्ता की भावना एवं क्षमता है। जिसके द्वारा वह घटनाओं का उसी क्रम में वर्णन करने का प्रयत्न करता है जैसा कि उसकी इन्द्रियाँ अवलोकन करती हैं।

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठता से सम्बन्धित समस्याएँ

निष्पक्षता व प्रमाण से प्राप्त निष्कर्ष ही वस्तुनिष्ठता कहलाते हैं परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समाजशास्त्र अमूर्त या जटिल घटनाओं या समस्याओं का अध्ययन करता है। सामाजिक घटनाओं की प्रकृति के कारण सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता रख पाना एक कठिन कार्य है। इसलिए वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में निम्नलिखित समस्याएँ आती हैं

(i) समस्या के चयन में मूल्यों द्वारा प्रभावित होना
(ii) अध्ययन में तटस्थता का अभाव
(iii) बाह्य हितों द्वारा बाधा
(iv) सामाजिक घटनाओं की प्रकृति अमूर्त व जटिल
(v) किसी एक कारक पर अधिक बल
(vi) अनुसन्धानकर्ता सामान्य ज्ञान तथा वास्तविक ज्ञान के भ्रम में स्वयं को उलझा लेता है।
(vii) शीघ्र निर्णय की आवश्यकता

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मानव द्वारा मानव का अध्ययन पूरी तरह वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। इस बात का समर्थन मैक्स वेबर जैसे समाजशास्त्रियों द्वारा भी किया गया है।

वस्तुनिष्ठता को बनाए रखने के उपाय

मैक्स वेबर कहते हैं कि वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन कार्य है तो वहीं दुर्खीम कहते हैं कि सामाजिक अनुसन्धानकर्ता समाज का वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर सकता है और इन्होंने आत्महत्या, श्रम-विभाजन एवं धर्म की समाज में उपयोगिता के आधार पर अनुसन्धान किया भी है। इसीलिए वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में कुछ सावधानियाँ रखनी पड़ती हैं, जो निम्नलिखित हैं

(i) प्रयोगसिद्ध पद्धतियों का उपयोग
(ii) स्पष्ट शब्दों एवं अवधारणाओं का प्रयोग
(iii) दैव-निदर्शन का उपयोग अत्यधिक
(iv) एक से अधिक पद्धतियों का प्रयोग
(v) सामूहिक शोध पद्धतियों का प्रयोग
(vi) यान्त्रिक उपकरणों का उपयोग

उपरोक्त विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानव के अपने स्वभाव के कारण वस्तुनिष्ठ विवेचन में अनेक दोष पाए जाते हैं परन्तु इन सामान्य दोषों के अतिरिक्त वस्तुनिष्ठ अध्ययन में और अधिक दोष नहीं पाए जाते। अनुसन्धानकर्ता अपने विषय के प्रति सचेत व तटस्थ रहें तो समाजशास्त्र को निष्पक्ष अध्ययन के माध्यम से विज्ञान बनाया जा सकता है जो वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के उपाय या साधन

(i) प्रयोगसिद्ध पद्धतियाँ
(ii) सांख्यिकी मापन
(iii) पारिभाषिक शब्दों एवं धारणाओं का प्रमाणीकरण
(iv) यान्त्रिक साधनों का प्रयोग
(v) दैव-निदर्शन का प्रयोग
(vi) प्रश्नावली और अनुसूची का प्रयोग
(vii) सामूहिक अनुसन्धान

व्यक्तिनिष्ठता या वैयक्तिकता
(Subjectivity)

मनुष्य द्वारा सामाजिक विज्ञानों में घटनाओं एवं समस्याओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने का प्रयत्न किया जाता है। फिर भी वैज्ञानिक अध्ययन में पूर्ण वस्तुनिष्ठता नही आ पाती। किसी अनुसन्धानकर्ता द्वारा सामग्री एकत्र करते समय अपने दृष्टिकोण से देखकर घटनाओं का वर्णन अपने अनुसार करना ही व्यक्तिनिष्ठता है।

वैयक्तिकता उस स्थिति या दशा को कहते हैं जब अवलोकन वैयक्तिक एवं पक्षपातयुक्त होता है। इसका तात्पर्य यह होता है कि सामाजिक घटनाएँ आत्मनिष्ठ प्रकृति की होती हैं। सामाजिक विज्ञानों में मनुष्य के परस्पर व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। यह व्यवहार अधिकांशत: आत्मनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ होता है जैसे सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने हेतु अनुसन्धानकर्ता को सामाजिक संगठन, सामाजिक प्रक्रियाओं एवं सामाजिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त करना होता है। अनुसन्धानकर्ता को उनके बाह्य एवं आन्तरिक दोनों पक्षों का विश्लेषण करना होता है। व्यवहार के आन्तरिक पक्ष को समझना अत्यन्त कठिन कार्य है इसलिए अध्ययन से अपने आपको पूर्णत: अलग रखना तथा वस्तुनिष्ठता बनाए रखना अत्यन्त कठिन होता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता दोनों साथ-साथ चलते हैं। वस्तुनिष्ठता जहाँ विज्ञान के पक्ष का पोषण करती है। वह व्यक्तिनिष्ठता मूल्यों का। अर्थात् तर्क एवं मूल्य दोनों साथ-साथ चलते हैं। अत: स्पष्ट है कि सामाजिक घटनाओं में व्यक्तिनिष्ठता का आना एक स्वाभाविक गुण है

सामाजिक अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता का स्रोत

सामाजिक विज्ञानों में वैयक्तिकता के आने के लिए केवल अनुसन्धानकर्ता ही उत्तरदायी नहीं है बल्कि अन्य प्रकार की अभिमति एवं पक्षपातों के कारण भी आत्मनिष्ठा आ जाने की सम्भावना रहती है। अभिमत का तात्पर्य यह है कि घटना को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत न करके अपने व्यक्तिगत मनोभावों एवं विचारों तथा दृष्टिकोणों को प्रस्तुत कर देने से वास्तविक स्वरूप छिप जाता है तथा व्यक्तिगत भावनाओं से युक्त मिथ्या स्वरूप उभार दिया जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता आने के निम्नलिखित कारण हैं

(i) शोधकर्ता का व्यक्तिगत मत
(ii) सूचनाओं की अभिमति
(iii) न्यायदर्श में पक्षपात
(iv) तथ्य प्रस्तुतीकरण की दोषपूर्ण प्रक्रिया
(v) दोषपूर्ण प्रश्नावलियाँ
(vi) वातावरण का प्रभाव

उपरोक्त कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में किस प्रकार से वैषयिकता बनाए रखी जा सकती है तथा किन कारणों वैयक्तिकता उत्पन्न हो जाती है। वैयक्तिकता को उत्पन्न करने के कौन-से कारण हैं। सामाजिक घटनाओं के विशुद्ध अध्यंयन हेतु वस्तुनिष्ठता बनाए रखकर समाज को नई दिशा प्रदान की जा सकती है किन्तु मानव अपनी कमजोरियों अपने आपको रोक नहीं पाता है जिससे वस्तुनिष्ठता का ह्रास हो जाता है।

Scanned with CamScanner

तथ्य (Statements)

अवधारणा की भाँति तथ्य भी सामाजिक अनुसन्धान में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। सामाजिक अनुसन्धान की सफलता तथ्यों पर ही निर्भर करती है इसीलिए इसको परिभाषित करते हुए **श्रीमती पीवी यंग** ने कहा है कि "तथ्य एक ऐसा शब्द है जिसकी परिभाषा करना कठिन है। यह केवल मूर्त चीजों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अमूर्त चीज; जैसे—विचार, अनुभव एवं भावनाएँ भी तथ्य की श्रेणी में आती हैं, इसी तरह **गुडे तथा हैट** ने कहा कि "तथ्य एक अनुभवसिद्ध सत्यापन हेतु अवलोकन है।

तथ्य समस्त विज्ञानों का मूलाधार है, तथ्य वह घटना है जिसको हम वास्तविक रूप में देख या सुन सकते हैं। तथ्यों का अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से किया जा सकता है। **दुर्खीम** जैसे समाजशास्त्री का कहना है कि समाजशास्त्र तथ्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है और इन्होंने तथ्य की तीन विशेषताएँ बताई हैं—बाह्यता, बाध्यता व सामान्यता।

तथ्य की परिभाषाएँ

- **गोल्डनर** के अनुसार, "किसी भी वैज्ञानिक प्रयास का सामान्य उद्देश्य संसार के किसी पक्ष से सम्बन्धित हमारे ज्ञान में विस्तार करना होता है"।
- **फेयरचाइल्ड** के अनुसार, "तथ्य किसी प्रदर्शित की गई या प्रकाशित की जा सकने योग्य वास्तविकता का मद, पद या विषय है .... यह एक घटना है जिसके निरीक्षणों एवं मापों के विषय में बहुत अधिक सहमति पाई जाती है।"
- **थॉमस** तथा **जनैनिकी** के अनुसार, "तथ्य स्वयं में एक अमूर्तिकरण ही है।"

तथ्य की विशेषताएँ

1. तथ्य एक ऐसी घटना है जो वास्तविक रूप में घटित होती है।
2. तथ्य मूर्त व अमूर्त दोनों प्रकार का हो सकता है।
3. तथ्य एक ऐसी घटना है जिसका निरीक्षण, परीक्षण, अवलोकन एवं अनुभव सम्भव होता है।
4. तथ्य एक ऐसी घटना है जिसके बारे में सभी का मत समान होता है।
5. तथ्य किसी घटना या प्रक्रिया की पूर्ण व्याख्या नहीं करता बल्कि विभिन्न तथ्य मिलकर किसी घटना या प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं।
6. घटना की प्रक्रिया जितनी जटिल होगी उसकी व्याख्या के लिए तथ्यों की शृंखला भी अधिक होगी।

तथ्यों के प्रकार

तथ्य को निम्नलिखित दो आधारों पर विभाजित किया जा सकता है

- **तथ्यों की प्रकृति के आधार पर** तथ्यों को दो वर्गों में बाँटा गया है
  (i) गुणात्मक तथ्य (ii) परिमाणात्मक तथ्य
- **मौलिकता के आधार पर तथ्यों का विभाजन** इसके आधार पर भी तथ्यों को दो भागों में विभाजित किया गया है।
  (i) प्राथमिक तथ्य (ii) द्वितीयक अथवा प्रलेखनीय स्रोत

सामाजिक अनुसन्धान तथ्यों के संकलन पर आधारित होता है। तथ्यों के अभाव में सामाजिक अनुसन्धान की प्रक्रिया चल ही नहीं सकती। अत: सर्वेक्षणकर्ता अध्ययन की सरलता के लिए सभी प्रकार की सामग्री को दो प्रमुख भागों में विभाजित करता है

(i) प्राथमिक सामग्री (ii) द्वितीयक सामग्री

- स्वभाव या प्रकृति के आधार पर सूचनाएँ दो प्रकार की होती हैं
  (i) गुणात्मक
  (ii) परिमाणात्मक
- प्राथमिक सामग्री संकलन के दो प्रमुख तरीके हैं
  (i) प्रत्यक्ष स्रोत (ii) अप्रत्यक्ष स्रोत

प्रत्यक्ष स्रोत के अन्तर्गत—अवलोकन, अनुसूची एवं साक्षात्कार को सम्मिलित किया जाता है।

जबकि अप्रत्यक्ष स्रोत के अन्तर्गत—प्रश्नावली, मत-पत्र, टेलीफोन द्वारा साक्षात्कार तथा रेडियो अपील को सम्मिलित किया जाता है।

प्राथमिक सामग्री अथवा प्राथमिक स्रोतों के गुण

इसके गुण निम्नलिखित हैं

(i) अधिक विश्वसनीय (ii) वास्तविक चित्रण
(iii) विस्तृत जानकारी (iv) अधिक लोचपूर्ण
(v) उत्तरदाताओं पर नियन्त्रण (vi) सरल और कम खर्चीली

प्राथमिक सामग्री के दोष

इसके दोष निम्नलिखित हैं

(i) सर्वेक्षणकर्ता की अभिमत
(ii) अधिक मानव शक्ति की आवश्यकता
(iii) प्रशिक्षण का अभाव
(iv) अधिक समय एवं धन

द्वितीयक सामग्री के स्रोत

- **व्यक्तिगत प्रलेख** भी कई प्रकार के होते हैं
  (i) जीवन इतिहास (ii) डायरियाँ
  (iii) पत्र (iv) संस्मरण
- **सार्वजनिक प्रलेख** को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है
  (i) **प्रकाशित प्रलेख** के अन्तर्गत—रिकॉर्ड, प्रकाशित आँकड़े, सार्वजनिक संगठन की रिपोर्ट, अन्य।
  (ii) **अप्रकाशित प्रलेख** के अन्तर्गत—गोपनीय रिकॉर्ड, दुर्लभ हस्तलेख, विभिन्न अभिलेख, इत्यादि।

द्वितीयक स्रोतों के गुण या महत्त्व

(i) पक्षपात से स्वतन्त्र (ii) भूतकालीन तथ्यों का संग्रह
(iii) गोपनीय सूचनाओं का ज्ञान (iv) समय, धन, परिश्रम की बचत

द्वितीयक स्रोतों के दोष

(i) केवल सामान्य विवरण (ii) पुनर्परीक्षा कठिन
(iii) झूठे रिकॉर्ड (iv) विश्वसनीयता का अभाव

Scanned with CamScanner

गणनात्मक विधि

(Quantitative Method)

गणनात्मक विधि का परिचय
(Introduction of Quantitative Method)

अवलोकन प्रश्नावली, अनुसूची तथा साक्षात्कार गणनात्मक पद्धतियाँ ही मानी जाती हैं जबकि गुणात्मक पद्धतियाँ केवल गुणों को महत्त्व देती हैं, संख्याओं को नहीं। सहभागी अवलोकन वैयक्तिक अध्ययन, अन्तर्वस्तु विश्लेषण तथा जीवन इतिहास गुणात्मक पद्धतियाँ मानी जाती हैं।

गणनात्मक विधि की परिभाषाएँ

- **गुडे** एवं **हाट** के अनुसार, ''जब विज्ञान की आधारभूत बातों को समाजशास्त्र के क्षेत्र में लागू किया जाता है तो उसे हम विधि या पद्धति कह सकते हैं।''
- **लुण्डबर्ग** के अनुसार, ''विस्तृत अर्थ में वैज्ञानिक पद्धति तथ्यों का व्यवस्थित अवलोकन, वर्गीकरण एवं निर्वाचन है।''

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गणनात्मक विधि के द्वारा हम तथ्यों की गणना का कार्य करते हुए उनको व्यवस्थित भी करते हैं। इनका वैज्ञानिक पद्धति में महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाजशास्त्र में प्रयोग की जाने वाली पद्धतियों को हम दो श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं

(i) सामान्य पद्धति (ii) विशिष्ट पद्धति

वैज्ञानिक पद्धति को हम एक सामान्य पद्धति कह सकते हैं क्योंकि यह सभी विषयों में एक समान है। **स्टुअर्ट चेज** ने इसी सन्दर्भ में कहा है कि ''विज्ञान पद्धति के साथ चलता है, विषय-वस्तु के साथ नहीं।''

प्रत्येक विषय की अपनी एक विषय-वस्तु होती है। जिसका अध्ययन करने के लिए उस विषय में विशिष्ट पद्धतियाँ या विधियाँ होती हैं। समाजशास्त्र में भी विषय-वस्तु का अध्ययन कुछ विशिष्ट विधियों की सहायता से किया जाता है। जो विधियाँ संख्याओं एवं माप को महत्त्व देती हैं, उन्हें हम गणनात्मक विधियाँ कहते हैं।

परिमाणन की मान्यताएँ

परिमाणनात्मक अनुसन्धान का सम्बन्ध विभिन्न चरों में गणनात्मक (परिमाणन) सम्बन्धों की स्थापना से है। यह चर भार, समय, निष्पादन, उपचार, आधुनिकीकरण इत्यादि कुछ भी हो सकते हैं। इन चरों का सूचनादाताओं के निदर्शन के आधार पर मापन करने का प्रयास किया जाता है।

परिमाणात्मक सम्बन्धी अध्ययन मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं

(i) वर्णनात्मक अध्ययन (ii) प्रायोगिक अध्ययन

(i) पहले प्रकार के अध्ययनों में व्यवहार या परिस्थितियों को परिवर्तित करने हेतु कोई प्रयास नहीं किया जाता है। इन्हें उसी रूप में मापने का प्रयास किया जाता है, जिस रूप में वे विद्यमान होती हैं।

(ii) प्रायोगिक अध्ययनों में दो चरों में सम्बन्ध स्थापित करने हेतु उसका मापन किया जाता है तथा फिर नियन्त्रण एवं हस्तक्षेप कर पुनः मापन किया जाता है ताकि यह ज्ञात हो सके कि नियन्त्रण एवं हस्तक्षेप का परिणाम क्या हुआ। इस प्रकार के अध्ययनों में एक चर को नियन्त्रित चर तथा दूसरे को आश्रित चर कहा जाता है। इन्हें देशान्तरीय अथवा पुनरावृत्ति मापन अध्ययन भी कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

गणनात्मक विधि की मान्यताएँ

1. विभिन्न चरों में पाए जाने वाले सम्बन्धों का यथार्थ मापन सम्भव है।
2. सामाजिक व्यवहार एवं घटनाओं से सम्बन्धित अध्ययनों में भी कारण-प्रभाव सम्बन्धों की स्थापना करना सम्भव है।
3. सामाजिक घटनाओं के व्यवहार एवं द्रव्य के व्यवहार में अनेक समरूपताएँ पाई जाती हैं।
4. पैमानों के निर्माण द्वारा घटनाओं के विभिन्न अंगों अथवा पक्षों में पाए जाने वाले तारतम्य को ज्ञात किया जा सकता है।

मापन हेतु अपनाए गए पैमानों की विश्वसनीयता की जाँच अनेक पद्धतियों द्वारा की जा सकती है इसमें परीक्षा-पुनर्परीक्षा पद्धति, विविध स्वरूप पद्धति तथा दो भागों में बाँटने की पद्धति प्रमुख है।

- **गुडे** एवं **हाट** ने पैमानों की प्रमाणिकता की जाँच करने की चार पद्धतियों का उल्लेख किया है
  (i) तार्किक प्रमाणीकरण
  (ii) पंचों की राय
  (iii) परिचित समूह
  (iv) स्वतन्त्र मापदण्ड

सर्वेक्षण (Survey)

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी के Survey शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। Survey शब्द की व्युत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'sur' एवं लैटिन 'veeir' शब्दों के योग से हुई है जिनका अर्थ क्रमशः 'ऊपर' (over) और 'देखना' (to see) है। इसी तरह Survey का शाब्दिक अर्थ हुआ, किसी घटना या स्थिति को ऊपर से देखना या अवलोकन करना।

सामाजिक सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण सामाजिक घटनाओं के व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन की एक प्रणाली है। यूरोप में 18वीं सदी के अन्त तथा 19वीं सदी के प्रारम्भ में सामाजिक सर्वेक्षण एक आन्दोलन के रूप में उभरा। **वाटोमोर** ने यहाँ तक कहा है कि "समाजशास्त्र के आरम्भिक विकास की पृष्ठभूमि तैयार करने वाले शैक्षणिक या बौद्धिक कारकों में सामाजिक सर्वेक्षण आन्दोलन की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है।" सामाजिक सर्वेक्षण आन्दोलन ने दो तथ्यों एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला

1. सामाजिक समस्याओं के अध्ययन में रुचि और
2. सामाजिक घटनाओं के वैज्ञानिक अध्ययन की सम्भावना

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रमाण काफी प्राचीन काल से प्राप्त होते हैं। हेरोडोटस ने मिस्र के समाज का सर्वेक्षण किया वहीं कौटिल्य ने भारतीय समाज का। इससे स्पष्ट होता है कि Survey की पद्धति आज की नहीं बल्कि प्राचीन काल की देन है।

सामाजिक सर्वेक्षण की परिभाषाएँ

- **मोर्स** के अनुसार, "सामाजिक सर्वेक्षण वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित विश्लेषण की एक पद्धति है। जिसके द्वारा निश्चित एवं सुपरिभाषित उद्देश्यों के अनुरूप किसी सामाजिक घटना, समस्या अथवा जनसंख्या का अध्ययन किया जाता है।"
- **बर्गेस** के अनुसार, "किसी समुदाय का सर्वेक्षण सामाजिक विकास का रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत करने हेतु उसकी दशाओं एवं आवश्यकताओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।
- **वेल्स** के अनुसार, "श्रमिक वर्ग की निर्धनता तथा समुदाय की प्रकृति और समस्याओं सम्बन्धी तथ्य खोजने वाला अध्ययन ही सामाजिक सर्वेक्षण है।"
- **फेयर चाइल्ड** के अनुसार, "समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा इसके किसी एक विशेष पक्ष; जैसे–स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन आदि से सम्बन्धित व्यवस्थित एवं पूर्ण तथा विश्लेषण को ही सर्वेक्षण कहा है।"
- **हैरीसन** के अनुसार, "सामाजिक सर्वेक्षण एक सहकारी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत किसी भौगोलिक क्षेत्र में पाई जाने वाली सामाजिक दशाओं तथा समस्याओं के अध्ययन एवं विश्लेषण हेतु वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग किया जाता है।"

सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति एवं विशेषताएँ

विभिन्न परिभाषाओं से सामाजिक सर्वेक्षण की प्रकृति का पता चलता है इसकी निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

1. सामाजिक सर्वेक्षण मुख्यतः एक वैज्ञानिक विधि है।
2. इसमें एक निश्चित भौगोलिक सीमा में समुदाय अथवा समूह का अध्ययन किया जाता है।
3. इसका मुख्य सम्बन्ध विघटनकारी सामाजिक समस्याओं की खोज करने से है।
4. इसके अन्तर्गत सामाजिक विघटन के कारणों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार यह सामाजिक सुधार और उपचार से भी सम्बन्धित है।
5. यह सामाजिक जीवन के प्रत्यक्ष अध्ययन से सम्बन्धित है।
6. इसमें तथ्यों का प्रस्तुतीकरण व प्रकटीकरण किया जाता है।
7. इसमें प्राथमिक और द्वितीयक सामग्री एकत्रित की जाती है।
8. इसमें प्रश्न सूची, अनुसूची, साक्षात्कार एवं अवलोकन आदि प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।
9. इसका उद्देश्य सामाजिक सुधार करना है।

सामाजिक सर्वेक्षण के उद्देश्य

(i) सामाजिक घटना का वर्णन
(ii) सामाजिक समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन
(iii) कार्य-कारण सम्बन्ध की खोज
(iv) उपकल्पना का निर्माण तथा परीक्षण
(v) सामाजिक सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण
(vi) सामाजिक समस्याओं का अध्ययन
(vii) रचनात्मक कार्यक्रम बनाना

सामाजिक सर्वेक्षण के प्रकार

- **विषय क्षेत्र** के आधार पर
  (i) जनगणना सर्वेक्षण
  (ii) निदर्शन सर्वेक्षण
- **विषय-वस्तु** के आधार पर
  (i) जनमत सर्वेक्षण
  (ii) बाजार अनुसन्धान सर्वेक्षण

Scanned with CamScanner

- **अध्ययन विधि** के आधार पर
  - (i) पैनल सर्वेक्षण
  - (ii) सामुदायिक आत्म-सर्वेक्षण
  - (iii) व्यक्तिगत साक्षात्कार सर्वेक्षण
  - (iv) डाक प्रश्नावली सर्वेक्षण
  - (v) टेलीफोन सर्वेक्षण
  - (vi) नियन्त्रित अवलोकन सर्वेक्षण
- **वेल्स** ने सर्वेक्षण को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया है
  - (i) **प्रचार सर्वेक्षण** इस प्रकार के सर्वेक्षण में जनता में जागृति उत्पन्न की जाती है।
  - (ii) **तथ्य संकलन सर्वेक्षण** यह किसी घटना, तथ्य या समस्या के बारे में ज्ञान प्राप्त करने से सम्बन्धित है।
- **हरबर्ट हाइमैन** ने सामाजिक सर्वेक्षण के दो प्रकार बताए हैं
  - (i) विवरणात्मक सर्वेक्षण
  - (ii) व्याख्यात्मक सैद्धान्तिक या प्रयोगात्मक सर्वेक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण का क्षेत्र एवं विषय-वस्तु

- मोजर ने सामाजिक सर्वेक्षण के विषय क्षेत्र को चार भागों में विभाजित किया है
  - (i) जनसंख्यात्मक विशेषताएँ
  - (ii) सामाजिक पर्यावरण
  - (iii) सामाजिक क्रियाएँ
  - (iv) विचार या मनोवृत्ति

सामाजिक सर्वेक्षण का आयोजन एवं चरण

- (i) समस्या का चुनाव
- (ii) सर्वेक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण
- (iii) अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण
- (iv) प्रारम्भिक तैयारियाँ
- (v) निर्देशन का चुनाव
- (vi) कार्यकर्ताओं का चुनाव
- (vii) सर्वेक्षण का संगठन

सामाजिक सर्वेक्षण के गुण

- (i) परिमाणात्मक सूचनाएँ
- (ii) गुणात्मक सूचनाएँ
- (iii) वैज्ञानिक परिशुद्धता
- (iv) वस्तुनिष्ठता
- (v) उपकल्पना का निर्माण एवं परीक्षण

सामाजिक सर्वेक्षण के दोष

- (i) अमूर्त घटनाओं का अध्ययन असम्भव
- (ii) अत्यधिक समय एवं धन
- (iii) निदर्शन त्रुटि
- (iv) अवास्तविक सूचनाएँ
- (v) अध्ययन का सीमित क्षेत्र
- (vi) सूचनाओं को सम्भालने की समस्या
- (vii) सूचनाएँ प्राप्त करने में कठिनाई

सामाजिक सर्वेक्षण एवं सामाजिक अनुसन्धान

समानता

- (i) सामाजिक घटनाओं का अध्ययन
- (ii) मानव व्यवहार को समझना
- (iii) वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग
- (iv) अध्ययन प्रविधियों में समानताएँ
- (v) नवीन तथ्यों की खोज

अन्तर

- (i) परिकल्पना से सम्बन्धित अन्तर
- (ii) विषय क्षेत्र से सम्बन्धित अन्तर
- (iii) प्रकृति से सम्बन्धित अन्तर
- (iv) समय के आधार पर अन्तर
- (v) विषय-वस्तु के आधार पर अन्तर
- (vi) अध्ययन की गम्भीरता में अन्तर
- (vii) सामग्री के सम्बन्ध में अन्तर

इससे स्पष्ट होता है कि दोनों में समानताएँ होते हुए भी दोनों में महत्त्वपूर्ण अन्तर है। **फेयर चाइल्ड** का कहना है कि "सामाजिक सर्वेक्षण की अपेक्षा सामाजिक अनुसन्धान अधिक गहन एवं सूक्ष्म होता है तथा सामान्य सिद्धान्तों की खोज से अधिक सम्बन्धित होता है।" इन अन्तरों के बावजूद दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं क्योंकि जहाँ सामाजिक अनुसन्धान व्यक्ति की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है वहीं सामाजिक सर्वेक्षण से समस्याओं का समाधान तथा समाज कल्याण से सम्बन्धित योजनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं।

अनुसन्धान प्ररचना/शोध-प्रारूप

सामाजिक अनुसंन्धान या शोध में समस्या के चुनाव व निरूपण तथा उपकल्पनाओं का निर्माण कर लेने के पश्चात् अनुसन्धान प्ररचना बनाई जाती है। इसका कार्य अनुसन्धान को एक निश्चित दिशा प्रदान करना है किसी भी सामाजिक अनुसन्धान की प्रक्रिया को समुचित रूप में पूरा करने के लिए प्रारम्भ में ही निर्धारित की गई योजना की रूपरेखा को सामाजिक अनुसन्धान की प्ररचना कहा जाता है।

अनुसन्धान प्ररचना या शोध-प्रारूप का अर्थ **सैल्टिज, जहोदा तथा अन्य के** अनुसार, "सामाजिक अनुसन्धान का अर्थ सामाजिक घटनाओं तथा तथ्यों के बारे में नवीन जानकारी प्राप्त करना है अथवा पूर्व अर्जित ज्ञान में संशोधन, सत्यापन एवं संवर्द्धन करना है।" प्ररचना शब्द का अभिप्राय पूर्व निर्धारित रूपरेखा है।

एकोफ ने प्ररचना शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि "निर्णय कार्यान्वित करने की स्थिति आने के पूर्व ही निर्णय करने की प्रक्रिया को प्ररचना कहते हैं" यह एक सुविचारित पूर्वानुमानों की प्रक्रिया है जो सम्भावित स्थिति के नियन्त्रण के लिए अपनाई जाती है। इस प्रकार प्ररचना का अर्थ कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व सम्भावित स्थिति के नियन्त्रण के लिए तैयार की गई रूपरेखा या कार्यक्रम की योजना और अनुसन्धान प्ररचना का अर्थ अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व का एक विधिवत् कार्यक्रम है।

शोध-प्रारूप की एक अच्छी व्याख्या **कलिंजर** ने प्रस्तुत की है उनके अनुसार, अनुसन्धान या शोध प्रारूप अन्वेषण की योजना, संरचना एवं युक्ति है जिससे शोध-प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकें एवं प्रसरण को नियन्त्रित किया जा सके। *कलिंजर ने अपनी परिभाषा में अनुसन्धान प्ररचना के दो उद्देश्यों की चर्चा की।*

- (i) शोध सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना
- (ii) प्रसरण से उत्पन्न दोषों को नियन्त्रित करना जिससे वे उत्तर विश्वसनीय एवं वैध हो सकें।

Scanned with CamScanner

अनुसन्धान प्ररचना की प्रमुख विशेषताएँ

एक अच्छी अनुसन्धान प्ररचना में निम्नलिखित विशेषताओं का होना अनिवार्य है

1. यह लचीली होनी चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर किसी भी चरण में थोड़ा-बहुत परिवर्तन किया जा सके।
2. यह उपयुक्त होनी चाहिए ताकि विश्वसनीय सामग्री का संकलन किया जा सके।
3. यह कार्यकुशल होनी चाहिए ताकि अनुसन्धान के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके।
4. यह मितव्ययी होनी चाहिए ताकि उपलब्ध साधनों की सीमाओं के अन्तर्गत ही सम्पूर्ण अनुसन्धान को पूरा किया जा सके।

अनुसन्धान प्ररचना के प्रकार

उपरोक्त निर्णयों को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण अनुसन्धान प्ररचना को मुख्य रूप से **चार भागों** में विभाजित किया जा सकता है।

(i) **निदर्शन प्ररचना** इसमें अध्ययन की प्रकृति के अनुसार निदर्शन की इकाइयों के आकार तथा निदर्शन की पद्धति के बारे में पूर्व निर्णय लिया जाता है।

(ii) **अवलोकनात्मक प्ररचना** इसमें उन दशाओं के बारे में पूर्व निर्णय लिया जाता है जिनके अन्तर्गत अवलोकन किया जाना है अथवा अन्य किसी प्रविधि द्वारा सामग्री संकलित की जानी है।

(iii) **सांख्यिकीय प्ररचना** इसका सम्बन्ध संकलित सामग्री के विश्लेषण से है।

(iv) **संचालन प्ररचना** इसके अन्तर्गत उपरोक्त प्ररचना सम्बन्धी कार्य प्रणालियों को लागू किया जाना है। इसी के द्वारा ही अन्य तीनों प्ररचनाओं में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अनुसन्धान प्ररचना में कम-से-कम चार बातों के बारे में पूर्व निर्णयों को सम्मिलित किया जाना अनिवार्य है

(i) अनुसन्धान समस्या की स्पष्ट प्रस्तावना
(ii) सामग्री संकलन हेतु प्रयोग की जाने वाली प्रविधियाँ एवं कार्य प्रणालियाँ
(iii) अध्ययन का समग्र तथा
(iv) सामग्री के संसाधन एवं विश्लेषण हेतु प्रयोग की जाने वाली पद्धतियाँ

इसी तरह उद्देश्यों की भिन्नता के आधार पर अनुसन्धान प्ररचना के प्रमुख प्रकार हैं

(i) अन्वेषणात्मक या निरूपणात्मक अनुसन्धान प्ररचना
(ii) वर्णनात्मक अनुसन्धान प्ररचना
(iii) निदानात्मक अनुसन्धान प्ररचना
(iv) घटनोत्तर अनुसन्धान प्ररचना
(v) प्रयोगात्मक अनुसन्धान प्ररचना

अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसन्धान प्ररचनाओं में अन्तर

(i) अन्वेषणात्मक प्ररचना लचीली जबकि वर्णनात्मक कठोर होती है।
(ii) अन्वेषणात्मक में सांख्यिकी विश्लेषण नहीं होता, पर वर्णनात्मक में होता है।
(iii) अन्वेषणात्मक प्ररचना में असंरचित यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है जबकि वर्णनात्मक में संरचित एवं सोची-समझी प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।
(iv) अन्वेषणात्मक में पूर्व निर्णय नहीं लिए जाते हैं जबकि वर्णनात्मक में पूर्व निर्णय लिए जाते हैं।

उपकल्पना या प्राक्कल्पना

प्राक्कल्पना या उपकल्पना एक समय के अनुसार अथवा काम चलाऊ सामान्यीकरण निष्कर्ष है जो सही नहीं है बल्कि उसके बारे में अभी सत्यता की परीक्षा बाकी है। दूसरे शब्दों में, लक्ष्य तक पहुँचने के पहले मन-मन बना लिया गया विचार ही प्राक्कल्पना है। यह किसी भी प्रकार का अनुमान कल्पनात्मक विचार सहज ज्ञान था और कुछ भी हो सकता है जोकि अनुसन्धान का आधार बन जाता है। इस प्रकार यह एक ऐसा पूर्वानुमान है जो किसी भी सामाजिक घटना के विषय में खोज करने की प्रेरणा देता है।

सामाजिक अनुसन्धान में प्राक्कल्पना का निर्माण वैज्ञानिक अध्ययन का **प्रथम चरण** माना जाता है। उपकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार होता है जो शोधकर्ता किसी भी विषय के सम्बन्ध में अपने प्रारम्भिक ज्ञान एवं सामान्य अनुभव पर बनाता है। अनुसन्धानकर्ता का यही पूर्व विचार उसका ध्यान अनावश्यक तथ्यों से हटाकर आवश्यक व निश्चित तथ्यों पर केन्द्रित करके अनुसन्धान को दिशा प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, उपकल्पना का निर्माण अनुसन्धानकर्ता को अपने अध्ययन विषय से भटकाव को रोकता है तथा अनुसन्धान को निश्चिता प्रदान करता है, इसीलिए कहा जाता है कि उपकल्पना *के बिना सामाजिक अनुसन्धान में हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते।*

उपकल्पना की परिभाषाएँ

- **जॉर्ज कैसवेल** के अनुसार, ''उपकल्पना अध्ययन विषय से सम्बन्धित अस्थायी तथा काल्पनिक निष्कर्ष है।''
- **गुडे एवं हाट** के अनुसार, ''उपकल्पना भविष्य की ओर देखती है। यह एक तर्कपूर्ण वाक्य है जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है। यह सत्य भी हो सकती है और असत्य भी।''
- **बोगार्ड्स** के अनुसार, ''एक उपकल्पना एक प्रस्थापना है जिसका परीक्षण किया जाना है।''
- **पीटर एच मन्त्र** के अनुसार, ''उपकल्पना एक कामचलाऊ अनुमान है।''
- **पी वी यंग** के अनुसार, ''एक कार्यवाहक विचार जो उपयोगी खोज का आधार बनता है कार्यवाहक उपकल्पना माना जाता है।''

उपकल्पना की विशेषताएँ

1. उपकल्पना अनुसन्धान कार्य को निश्चितता प्रदान करती है।
2. यह अनुसन्धान को सही दिशा प्रदान करती है।
3. यह अध्ययन की सीमा को निर्धारित करती है।
4. यह सिद्धान्तों के निर्माण व विकास में सहायक होती है।
5. उपकल्पना अवधारणात्मक रूप से स्पष्ट होनी चाहिए।
6. उपकल्पना अनुभवसिद्ध होनी चाहिए, जिससे इसकी सत्यता की जाँच हो सके।
7. उपकल्पना विशिष्ट होनी चाहिए।
8. उपकल्पनाएँ सरल होनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

9. उपकल्पना तर्कपूर्ण होनी चाहिए। जैसे—दुर्खीम ने आत्महत्या के लिए उपकल्पनाएँ बनाई थीं।

10. उपकल्पना सिद्धान्त समूह से सम्बद्ध होनी चाहिए।

उपकल्पनाओं के प्रकार

- **डॉ. सुरेन्द्र सिंह** ने उपकल्पनाओं को दो भागों में बाँटा है
- **तात्विक उपकल्पना** इसमें दो या अधिक चरों के बीच में अनुमान पर आधारित सम्बन्धों को व्यक्त किया जाता है, यह परीक्षणीय नहीं होती है।
- **सांख्यिकी उपकल्पना** तात्विक उपकल्पना के सम्बन्धों से निगमित सांख्यिकी सम्बन्धों का एक अनुमान पर आधार कथन होता है, इसके परीक्षण के लिए किसी-किसी आधार का होना आवश्यक है।
- **हैज** के अनुसार, वर्गीकरण में दो स्वरूपों का वर्णन किया गया
  (i) सरल उपकल्पना (ii) जटिल उपकल्पना
- इसी तरह **गुडे** एवं **हाट** ने तीन प्रकार की उपकल्पनाओं का उल्लेख किया है
  (i) अनुभवात्मक समानताओं से सम्बन्धित
  (ii) जटिल, आदर्श प्रारूपों से सम्बन्धित
  (iii) विश्लेषणात्मक चरों से सम्बन्धित
- **उपकल्पना के स्रोत** गुडे एवं हाट ने निम्नलिखित स्रोत बताए हैं
  (i) सामान्य संस्कृति (ii) वैज्ञानिक सिद्धान्त
  (iii) समरूपताएँ या सादृश्यताएँ (iv) व्यक्तिगत अनुभव
- **ए वुल्फ** ने कहा है "सादृश्यता उपकल्पनाओं के निर्माण तथा घटना में किसी कामचलाऊ नियम की खोज के लिए अत्यन्त उपयोगी पथ-प्रदर्शन है।

वैसे देखा जाए तो उपकल्पना के मुख्यत: दो स्रोत हैं
(i) व्यक्तिगत स्रोत (ii) बाह्य स्रोत

उपकल्पना की सीमाएँ

(i) उपकल्पना को ध्रुव सत्य नहीं मानना चाहिए।
(ii) तथ्य संकलन में सीमितता
(iii) पक्षपात की सम्भावना

वेस्तावे की इस उक्ति को सदैव ध्यान में रखकर उपकल्पना का निर्माण करना चाहिए "प्राक् कल्पनाएँ वे लोरियाँ हैं जो असावधान को गाना गाकर सुला देती हैं।"

उपकल्पना का महत्त्व या उपयोगिता

(i) अनुसन्धान की दिशा निश्चित करना
(ii) अनुसन्धान का उद्देश्य स्पष्ट करना
(iii) अध्ययन क्षेत्र को सीमित करने में उपयोगी
(iv) अध्ययन में निश्चितता लाना
(v) उपयोगी तथ्यों के संकलन में सहायक
(vi) निष्कर्ष निकालने में उपयोगी
(vii) सिद्धान्तों के निर्माण में सहायक

निदर्शन या प्रतिदर्श (Sampling)

सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन पद्धति का अत्यधिक महत्त्व है। यदि किसी समाज या समूह का अध्ययन करने के लिए हम कुछ इकाइयों का चयन करते हैं। जिसमें समाज व समूह के गुणों का प्रतिनिधित्व हो तो इसे हम निदर्शन पद्धति कहते हैं।

सामाजिक अनुसन्धान में मुख्य रूप से दो विधियों को अपनाया जाता है एक को **जनगणना पद्धति** तो दूसरे को **निदर्शन पद्धति** कहा जाता है। जनगणना पद्धति में हम प्रत्येक इकाई से सम्पर्क स्थापित करते हैं। इसके विपरीत पूरे समूह से कुछ इकाइयों को चुनते हैं तो चुनी हुई इकाइयों को ही निदर्शन कहते हैं। यदि निदर्शन पूरे समूह के लक्षणों का प्रतिनिधित्व नहीं करता तो प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय नहीं होते इसीलिए कहा गया है कि निदर्शन के अन्दर सभी गुणों का प्रतिनिधित्व होना आवश्यक है इसको अनेक विद्वानों द्वारा परिभाषित किया गया है।

निदर्शन की परिभाषाएँ

- **गुडे** एवं **हाट** ने कहा है कि "एक निदर्शन सम्पूर्ण समूह का न्यूनतम प्रतिनिधि है।"
- **यंग** के अनुसार, "एक सांख्यिकीय निदर्शन उस सम्पूर्ण समूह या योग का अति लघु चित्र है जिसमें से कि निदर्शन लिया गया है।"
- **फेयर चाइल्ड** के अनुसार, "निदर्शन वह प्रक्रिया पद्धति है जिसके द्वारा एक विशिष्ट समय में से निश्चित संख्या में व्यक्तियों, विषयों अथवा निरीक्षणों को निकाला जाता है।"
- **बोगार्ड्स** के अनुसार, "निदर्शन एक पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार इकाइयों के एक समूह में से निश्चित प्रतिशत का चयन है।"
- **सिनपाओ पेंग** के अनुसार, "एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधिक अंश है।"
- **फ्रैंक** के शब्दों में "निदर्शन शब्द का प्रयोग केवल किसी समग्र चीज की इकाइयों के एक सेट या भाग के लिए किया जाना चाहिए जिसे इस विश्वास के साथ चुना गया है कि वह समग्र का प्रतिनिधित्व करेगा।"

उपरोक्त परिभाषाओं से यह ज्ञात होता है कि निदर्शन किसी विशाल समूह का वह भाग है जो उस सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करता है इससे स्पष्ट होता है कि हम चुनी हुई इकाइयों के आधार पर सम्पूर्ण के बारे में निष्कर्ष निकाल सकते हैं इस प्रकार निदर्शन समग्र से जुड़ी हुई वह इकाई होती है जो प्रत्येक दृष्टि से सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करती है।

निदर्शन की विशेषताएँ

सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन पद्धति द्वारा विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन सरल व सुविधाजनक ढंग से हो सकता है। इसमें सम्पूर्ण के अध्ययन के लिए उसकी समस्त इकाइयों का अध्ययन नहीं किया जाता बल्कि उन इकाइयों को अध्ययन के लिए चुना जाता है जिसमें सम्पूर्ण के सभी लक्षण विद्यमान हों। इसीलिए इस प्रणाली के उपयोग से समय, धन तथा अनुसन्धानकर्ता अनावश्यक परिश्रम से छुटकारा पा सकता है

1. प्रतिनिधि इकाइयों का अध्ययन
2. विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
3. प्राप्त सूचनाओं का निरीक्षण व पुन:परीक्षण
4. निर्वाचित इकाइयों का वृहद् अध्ययन
5. सूचनाओं की प्राप्ति में सुविधा

Scanned with CamScanner

निदर्शन के प्रकार

निदर्शन के चयन में समस्याओं के अनुरूप अनेक प्रणालियाँ प्रचलित हैं। प्रत्येक प्रणाली की अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। *इसकी मुख्यत: चार प्रणालियाँ हैं*

(i) दैव निदर्शन (ii) स्तरित निदर्शन
(iii) उद्देश्यपूर्ण निदर्शन (iv) अन्य

इसके अलावा सामाजिक अनुसन्धान में निदर्शन की अनेक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जिन्हें हम **दो प्रमुख श्रेणियों** में विभाजित करते हैं

सम्भावित निदर्शन के ही अन्तर्गत दैव निदर्शन आता है इसके अतिरिक्त इसके अन्तर्गत, लाटरी पद्धति, ग्रिड पद्धति, दैव संख्या सारणी पद्धति आदि आते हैं। इसी प्रकार दैव निदर्शन पद्धति का प्रयोग अनेक रूपों में किया जाता है जिसमें सरल दैव निदर्शन, स्तरीकृत दैव निदर्शन, क्षेत्रीय या गुच्छ निदर्शन, द्विश: या पुनरावृत्ति निदर्शन एवं क्रमबद्ध निदर्शन आते हैं।

असम्भावित निदर्शन पद्धति के अन्तर्गत भी अनेक पद्धतियाँ आती हैं;

जैसे—अभ्यंश या कोटा निदर्शन, उद्देश्यपूर्ण निदर्शन एवं आकस्मिक निदर्शन आते हैं।

निदर्शन के गुण

(i) समय की बचत
(ii) धन की बचत
(iii) परिश्रम की बचत
(iv) अधिक गहन अध्ययन की सम्भावना
(v) निष्कर्षों की परिशुद्धता
(vi) प्रशासनिक सुविधा

जैसे—अनुसन्धान क्षेत्र प्राय: बड़ा होता है और जिसमें प्रत्येक सूचनादाता के पास पहुँचना सम्भव नहीं होता तथा सूचनादाता की अनिच्छा से बचा जा सकता है।

निदर्शन के दोष

(i) अभिरुचि की समस्या
(ii) प्रतिनिधित्व का सही रूप में चयन न हो पाना
(iii) विशेष ज्ञान की आवश्यकता
(iv) पक्षपात की सम्भावना

निदर्शन प्रणाली में उपरोक्त दोषों के बावजूद इसमें असंख्य अच्छाइयाँ हैं क्योंकि इसमें समग्र में से कुछ चुनी हुई इकाइयों का अध्ययन करते हैं तत्पश्चात् जो निष्कर्ष निकालते हैं वह सार्वभौमिक रूप से सबके लिए मान्य होता है साथ-साथ यह समय, धन तथा परिश्रम की बचत करता है।

आँकड़े संकलन की विधियाँ—अवलोकन

मनुष्य सदा अवलोकन करता रहता है, जिससे उसके ज्ञान में वृद्धि होती रहती है। यह सूचना प्राप्त करने की हमारी सबसे प्राथमिक एवं प्राचीन विधि है। अवलोकन को वैज्ञानिक विधि की शास्त्रीय विधि भी कहा जा सकता है। प्राकृतिक विज्ञानों के सिद्धान्त मुख्यत: अवलोकन पद्धति की ही देन हैं। सामाजिक विज्ञानों में भी अवलोकन तथ्य संकलन एवं ज्ञान संग्रह की मौलिक विधि है।

अवलोकन शब्द अंग्रेजी के (observation) का हिन्दी रूपान्तर है। इसे निरीक्षण या प्रेक्षण भी कहते हैं। अवलोकन का सामान्य अर्थ होता है—**आँखों के द्वारा देखना**। इसमें मानव इन्द्रियों के द्वारा प्रत्यक्ष एवं गहन अध्ययन किया जाता है। **गुडे एवं हाट** का कहना है "विज्ञान निरीक्षण से प्रारम्भ होता है और इसको अन्तिम रूप से प्रमाणीकरण के लिए निरीक्षण पर लौट आना पड़ता है।"

अवलोकन की परिभाषाएँ

- **पी वी यंग** के अनुसार, "अवलोकन स्वाभाविक घटना का घटित होते समय नेत्रों द्वारा सुव्यवस्थित एवं सोद्देश्य अध्ययन है।"
- **गाल्टुंग** के अनुसार, "अवलोकन सभी प्रकार की इन्द्रियग्राह्य विषय-वस्तु का आलेखन है।"
- **सी ए मोजर** के अनुसार, "ठोस अर्थ में अवलोकन में कानों एवं वाणी की अपेक्षा आँखों का अधिक उपयोग होता है।"
- **कुर्ट लेविन** के अनुसार, "सभी प्रकार के अवलोकन अन्तत: विशेष घटनाओं या विशेष समूहों में वर्गीकृत होते हैं। वैज्ञानिक विश्वसनीयता सही अवलोकन या प्रत्यक्षीकरण और सही वर्गीकरण पर ही आधारित है।"

परिभाषाओं के द्वारा स्पष्ट है कि अवलोकन प्राथमिक तथ्यों को एकत्रित करने की एक महत्त्वपूर्ण पद्धति है। इस पद्धति के द्वारा शोधकर्ता सामाजिक घटनाओं एवं उनकी वस्तुस्थिति का यथार्थ रूप में निरीक्षण करके तथ्यों को संकलित करता है। अवलोकन प्रणाली तथ्य संकलन की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें प्रत्यक्ष प्रश्न किए बिना घटना के सम्बन्ध में व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

अवलोकन की विशेषताएँ

1. मानव इन्द्रियों का उपयोग
2. प्राथमिक आँकड़ों का संकलन
3. प्रत्यक्ष एवं सूक्ष्म अध्ययन
4. विश्वसनीय सूचना का स्रोत
5. सामूहिक व्यवहार का अध्ययन
6. पारस्परिक एवं कार्य-कारण सम्बन्ध का पता लगाना
7. उपकल्पना का निर्माण

अवलोकन के प्रकार 8

क्षेत्र-अवलोकन जो नियन्त्रित एवं स्वाभाविक परिस्थितियों में किए जाते हैं।

प्रयोगशाला अवलोकन तो नियन्त्रित एवं कृत्रिम दशा में किए जाते हैं।

सामान्य अवलोकन जो हम सामान्य रूप से रोजमर्रे के जीवन में सूचना प्राप्ति के लिए करते हैं।

व्यवस्थित अवलोकन वैज्ञानिक विधि में या तथ्य संकलन में प्रयोग करते हैं।

सहभागी अवलोकन जिसमें अवलोकनकर्ता तथ्य संकलन के लिए समूह का ही एक सदस्य बन जाता है भले ही अस्थायी तौर पर।

असहभागी अवलोकन इसमें बिना समूह की गतिविधियों में भाग लिए एक तटस्थ वैज्ञानिक शोधकर्ता के रूप में तथ्य संकलित किए जाते हैं।

नियन्त्रित अवलोकन यह वह अवलोकन है जब शोधकर्ता अपने विषय को नियन्त्रित दशा में अवलोकित करता है इन्हें संरचित अवलोकन भी कहते हैं।

अनियन्त्रित अवलोकन जब शोधकर्ता अनियन्त्रित दशा में अवलोकन करता है इसे असंरचित अवलोकन भी कहते हैं।

इनके अतिरिक्त सामूहिक अवलोकन, अर्द्धसहभागी अवलोकन (सहभागी एवं असहभागी अवलोकन के मध्य की स्थिति) आदि प्रकारों का भी उल्लेख किया जाता है।

Scanned with CamScanner

अवलोकन पद्धति का महत्त्व या गुण

(i) मानवीय क्रियाओं एवं व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन
(ii) घटनाओं का तात्कालिक अध्ययन
(iii) गहन सूचना प्राप्त करने में सहायक
(iv) अन्वेषणात्मक एवं निर्माणात्मक स्थिति में उपयोगी
(v) विस्तृत विवरण एवं समग्रात्मक अध्ययन
(vi) सामान्य सूचनाएँ प्राप्त करने में सहायक
(vii) अधिक विश्वसनीय

अवलोकन पद्धति की सीमाएँ या दोष

(i) सीमित क्षेत्र
(ii) संख्यात्मक पद्धति का प्रयोग कठिन
(iii) विश्वसनीयता एवं अभिनति की समस्या
(iv) अप्रतिनिधित्व पूर्ण प्रतिदर्श

प्रश्नावली (Questionnaire)

सामाजिक सर्वेक्षण में सम्भवत: तथ्य संकलन की सबसे अधिक प्रचलित विधि प्रश्नावली है उत्तर या सूचना प्राप्त करने के लिए साधारणत: प्रश्नों की जो सूची प्रयुक्त की जाती है उसे प्रश्नावली कहते हैं। प्रश्नावली एवं अनुसूची दोनों ही प्रश्नों की सूचियाँ हैं और कभी-कभी दोनों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है किन्तु सामाजिक अनुसन्धान की भाषा में अनुसूची मुख्यत: साक्षात्कार के लिए एक उपकरण के रूप में प्रयुक्त होती है। जबकि प्रश्नावली को अधिकांशत: उत्तर दाताओं के पास डाक द्वारा भेज दिया जाता है जिसे भरकर उत्तरदाता पुन: शोधकर्ता को लौटा देता है। यही कारण है कि **लुण्डबर्ग** ने प्रश्नावली को एक विशेष प्रकार की अनुसूची भी कहा है जो स्वरूप एवं संरचना की दृष्टि से तो एक-दूसरे के समान है किन्तु प्रयोग की दृष्टि से भिन्न।

प्रश्नावली प्रश्नों की एक क्रमबद्ध सूची है जिसे अध्ययन विषय से सम्बन्धित विस्तृत क्षेत्र के व्यक्तियों के पास भेज दिया जाता है और उससे अनुरोध किया जाता है कि वे उन प्रश्नों का उत्तर स्वयं लिखकर डाक द्वारा ही उपयुक्त समय में वापस भेज दें।

प्रश्नावली की परिभाषाएँ

- **बोग्गार्ड्स** के अनुसार ''प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रेषित की गई प्रश्नों की एक सूची है।''
- **गुडे एवं हाट** के अनुसार ''सामान्य रूप से प्रश्नावली से तात्पर्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की पद्धति है जिसमें एक पत्रक का प्रयोग किया जाता है जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है।''
- **लुण्डबर्ग** के अनुसार ''मूलभूत रूप में प्रश्नावली उत्तेजकों का एक समूह है जिसे शिक्षित लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है ताकि इन उत्तेजकों के प्रभाव से उत्पन्न उनके शाब्दिक व्यवहार का परीक्षण किया जा सके।''
- **गी** के अनुसार ''यह (प्रश्नावली) बड़ी संख्या में लोगों से अथवा चुने हुए लघु समूह से, जोकि विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है सीमित मात्रा में सूचना प्राप्त करने की सुविधाजनक प्रणाली है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्नावली प्रश्नों की एक व्यवस्थित सूची है जिसका उत्तर उत्तरदाता स्वयं लिखकर शोधकर्ता को लौटा देता है सामान्यत: प्रश्नावली डाक द्वारा प्रेषित की जाती है।

प्रश्नावली की विशेषताएँ

1. प्रश्नावली प्रश्नों की सूची है जिसे अनुसन्धानकर्ता उत्तरदाता के साथ डाक द्वारा भेजता है।
2. प्रश्नावली में जिन प्रश्नों को सम्मिलित करके प्रयोग किया जाता है उन्हें टाइप अथवा प्रकाशित करा लिया जाता है।
3. प्रश्नावली को भरते समय अनुसन्धानकर्ता द्वारा सूचनादाता को किसी प्रकार की सहायता नहीं दी जाती।
4. प्रश्नावली का उपयोग केवल शिक्षित और समाज के व्यक्तियों से आँकड़ों को एकत्रित करने हेतु किया जाता है।
5. प्रश्नावली के प्रश्नों का निर्माण खोज के विषय के उद्देश्य एवं प्रकृति को ध्यान में रखकर किया जाता है।
6. प्रश्नावली का निर्माण एक विस्तृत क्षेत्र में कम व्यय से किया जा सकता है।
7. प्रश्नावली को सूचनादाताओं के पास प्रेरित करते समय शोधकर्ता सही तथ्य भरकर उसे शीघ्र लौटाने के लिए एक सहभागी पत्र भेजता है।

प्रश्नावली के प्रकार

सामाजिक अनुसन्धान में अनेक प्रकार की प्रश्नावलियों का प्रयोग किया जाता है इसका वर्गीकरण अनेक आधारों पर किया जाता है जो निम्नलिखित हैं

सूचनाओं के आधार पर वर्गीकरण

जी ए लुण्डबर्ग ने सूचनाओं के आधार पर दो प्रकार की प्रश्नावली में विभाजित किया है

(i) तथ्य सम्बन्धी प्रश्नावली (ii) मत एवं मनोवृत्ति सम्बन्धी प्रश्नावली

संरचना के आधार पर वर्गीकरण

पी वी यंग ने इस आधार पर प्रश्नावली को दो श्रेणियों में विभाजित किया है

(i) संरचित प्रश्नावली (ii) असंरचित प्रश्नावली

प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर

इस आधार पर प्रश्नावली को चार वर्गों या श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है

(i) प्रतिबन्धित प्रश्नावली (ii) खुली प्रश्नावली
(iii) मिश्रित प्रश्नावली (iv) चित्रमय प्रश्नावली

प्रश्नावली की रचना अथवा निर्माण

(i) अनुसन्धान समस्या की जानकारी होनी चाहिए
(ii) सहयोगियों तथा विशेषज्ञों से विचार-विमर्श
(iii) प्रश्नावली का पूर्व-परीक्षण
(iv) प्रश्नावली की छपाई।

प्रश्नावली के प्रयोग की पद्धतियाँ

इसकी मुख्यत: दो पद्धतियाँ हैं

(i) प्रत्यक्ष सम्बन्ध (ii) डाक द्वारा प्रेषित प्रश्नावली

Scanned with CamScanner

प्रश्नावली के गुण

(i) विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन
(ii) सूचनाओं की शीघ्र प्राप्ति
(iii) प्रमाणित एवं स्वतन्त्र सूचनाएँ
(iv) प्रश्नावली भरने की सुविधा
(v) सरल प्रविधि
(vi) पुनरावृत्ति सम्भव
(vii) कम खर्चीली
(viii) समय की बचत
(ix) सरल सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रश्नावली के दोष

(i) केवल शिक्षितों का अध्ययन सम्भव
(ii) सूक्ष्म एवं गहन अध्ययनों में अनुपयुक्त
(iii) अपूर्ण सूचना
(iv) प्रत्युत्तर की समस्या
(v) सार्वभौमिक प्रश्न असम्भव
(vi) अस्पष्ट लेख
(vii) अनुसन्धानकर्ता की सहायता का अभाव
(viii) सूचनाओं की अविश्वसनीयता

अनुसूची (Schedule)

अनुसूची तथ्यों के संकलन की विधि है। सामाजिक अनुसन्धान एवं सर्वेक्षण में अनुसूची प्रणाली का प्रयोग अत्यन्त व्यापक है। अनुसूची प्रश्नों की एक लिखित सूची है जिसके माध्यम से अनुसन्धानकर्ता क्षेत्र में जाकर सम्बन्धित व्यक्तियों से मिलकर जानकारी एकत्रित करता है।

अनुसूची शब्द अंग्रेजी के शब्द 'Schedule' का हिन्दी अनुवाद है इसका सामान्य अर्थ एक सूची (A list) नामावली (statement) से है। अनुसूची को उत्तरदाता के पास डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। अनुसूची प्राथमिक तथ्यों को संकलित करने की एक ऐसी विधि है जिसमें अवलोकन, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली तीनों की ही विशेषताओं एवं गुणों का समन्वय पाया जाता है।

अनुसूची की परिभाषाएँ

- **गुडे एवं हाट** के अनुसार, ''अनुसूची प्रायः ऐसे प्रश्नों के समूह का नाम है जिन्हें एक साक्षात्कारकर्ता अन्य व्यक्ति से आमने-सामने की स्थिति में पूछता है तथा उसके उत्तर स्वयं भरता है।''
- **बोगार्ड्स** के अनुसार ''अनुसूची उन तथ्यों के प्राप्त करने की एक औपचारिक पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है जो वैषियक रूप में है और स्पष्ट रूप से देखने योग्य है।''
- **पी वी यंग** के अनुसार ''अनुसन्धानकर्ता अनुसूची को पथ-प्रदर्शन, अन्वेषण के क्षेत्र को सीमित करने का साधन, स्मृति का यन्त्र तथा तथ्यों को लिपिबद्ध करने का एक तरीका है।''
- **मैकोर्मिक** के अनुसार ''अनुसूची प्रश्नों की एक सूची से अधिक कुछ भी नहीं है जिनका उपकल्पना या उपकल्पनाओं की जाँच के लिए उत्तर देना आवश्यक दिखाई देता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुसूची एक ऐसा प्रपत्र या फार्म है, जिस पर अनुसन्धान की समस्या से सम्बन्धित विभिन्न प्रश्नों को एक निश्चित क्रम में लिखा गया होता है तथा जिसे लेकर अनुसन्धानकर्ता सूचनादाता के पास जाता है और औपचारिक साक्षात्कार द्वारा इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके इनके उत्तर स्वयं भरता है।

अनुसूची की विशेषताएँ

1. प्रश्नों का उचित क्रम
2. सरल एवं स्पष्ट प्रश्न
3. सीमित आकार
4. सही सन्देशवाहन
5. सही प्रत्युत्तर
6. क्रॉस-प्रश्नों की व्यवस्था
7. प्रत्यक्ष सम्पर्क
8. प्रमुख क्षेत्रीय अनुसन्धान प्रविधि

अनुसूची के उद्देश्य

(i) अवलोकन में सहायता प्रदान करना
(ii) अध्ययन को गहन एवं अधिक अर्थपूर्ण बनाना
(iii) मूल्यांकन अध्ययनों में सहायता प्रदान करना
(iv) सभी प्रकार के आँकड़े, संकलन करने में सहायता प्रदान करना।

अनुसूची का निर्माण या रचना

(i) समस्या का ज्ञान होना जरूरी
(ii) प्रश्नों की रचना करना
(iii) प्रश्नों की भाषा एवं क्रम
(iv) प्रश्नों की वैद्धता की जाँच करना
(v) अनुसूची की बाह्य आकृति, एवं अन्तर्वस्तु

अनुसूची के प्रकार

सामाजिक अनुसन्धान में विविध प्रकार की अनुसूचियों को प्रयोग में लाया जाता है।

- **जी ए लुण्डबर्ग** ने उद्देश्यों के आधार पर अनुसूचियों की तीन श्रेणियों का उल्लेख किया है
  (i) वस्तुनिष्ठ तथ्यों के संकलन के लिए निर्मित अनुसूची
  (ii) मनोवृत्तियों तथा मतों का पता लगाने वाली अनुसूची
  (iii) सामाजिक संगठनों एवं संस्थाओं की स्थिति एवं कार्यों का पता लगाने के लिए निर्मित अनुसूची
- इसी तरह **पी वी यंग** ने चार प्रकार की अनुसूचियों का उल्लेख किया है
  (i) अवलोकन अनुसूची
  (ii) मूल्यांकन अनुसूची
  (iii) प्रलेख अनुसूची
  (iv) संस्था-सर्वेक्षण अनुसूची
- मुख्य रूप से सामाजिक अनुसन्धान में प्रयोग की जाने वाली अनुसूचियों को निम्नलिखित श्रेणियों या प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं
  (i) अवलोकन अनुसूची
  (ii) मूल्यांकन अनुसूची
  (iii) संस्था-सर्वेक्षण अनुसूची
  (iv) साक्षात्कार अनुसूची
  (v) प्रलेख अनुसूची

अनुसूची के गुण

(i) व्यक्तिगत सम्पर्क
(ii) ठोस एवं वास्तविक सूचनाओं की जानकारी
(iii) अवलोकन शक्ति का विकास
(iv) प्रामाणिक एवं लेखनबद्ध तथ्यों की प्राप्ति
(v) स्पष्ट उत्तर प्राप्त करने की सुविधा
(vi) अनावश्यक सूचनाओं से बचाव

Scanned with CamScanner

(vii) अनुसन्धानकर्ता के व्यक्तित्व का विकास
(viii) उत्तरों के सत्यापन की सुविधा

अनुसूची के दोष

(i) सीमित क्षेत्र का अध्ययन
(ii) अधिक समय एवं धन
(iii) सार्वभौमिक प्रश्न की समस्या
(iv) सम्पर्क की समस्या
(v) सूचनादाताओं द्वारा पक्षपात
(vi) साक्षात्कारकर्ताओं (कार्यकर्ताओं) के चयन एवं प्रशिक्षण में कठिनाई

प्रश्नावली एवं अनुसूची में अन्तर

(i) प्रश्नावली में अनुसन्धानकर्ता का सूचनादाता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता जबकि अनुसूची में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है।
(ii) प्रश्नावली को सूचनादाता के पास सामान्य डाक द्वारा भेजा जाता है जबकि अनुसूची में अनुसन्धानकर्ता सूचनादाता से स्वयं प्रश्न पूछता है।
(iii) प्रश्नावली का क्षेत्र विस्तृत जबकि अनुसूची का अपेक्षाकृत छोटा होता है।
(iv) प्रश्नावली का प्रयोग केवल शिक्षित सूचनादाताओं के लिए होता है जबकि अनुसूची द्वारा प्रत्येक प्रकार के सूचनादाताओं से सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं।

साक्षात्कार (Interview)

साक्षात्कार का सामाजिक अनुसन्धान की पद्धतियों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। समाजशास्त्री का अध्ययन विषय मनुष्य है, इसलिए समाजशास्त्रियों को यह सुविधा प्राप्त है कि उसका अध्ययन विषय अपने बारे में या अपने समाज के बारे में उसे बोलकर सूचित कर सकता है। साक्षात्कार का मूल आधार यही तथ्य है।

आलपोर्ट ने इस सम्बन्ध में सही कहा है "यदि आप जानना चाहते हैं कि लोग क्या महसूस करते हैं क्या अनुभव करते हैं और क्या स्मरण रखते हैं, उनकी भावनाएँ एवं प्रेरणाएँ क्या हैं तथा कोई व्यवहार करने का क्या कारण है तो आप उन्हीं से क्यों नहीं पूछते? वास्तविकता तो यह कि साक्षात्कार उत्तरदाता के शाब्दिक प्रत्युत्तर पर निर्भर करता है। यह तथ्य संकलन की मौलिक विधि है। साक्षात्कार विधि मौखिक रूप से प्रश्न के माध्यम से तथ्य-संकलन की विधि है, सामान्य अर्थों में साक्षात्कार उपचार के लिए, कार्यकर्ताओं के चुनाव के लिए या फिर किसी चीज की खोज-खबर के लिए प्रयुक्त होता है।

दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि साक्षात्कार सोद्देश्य वार्तालाप है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे से सूचना संकलित करता है। **डेंजिन** के अनुसार "साक्षात्कार सम्मुख वार्तालाप विनिमय है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे से सूचना प्राप्त करता है।"

साक्षात्कार की परिभाषाएँ

- **मानेन्द्र नाथ बसु** के अनुसार, "एक साक्षात्कार को कुछ बिन्दुओं पर व्यक्तियों के आमने-सामने के मिलन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"
- **गुडे एवं हाट** के अनुसार, "साक्षात्कार मूल रूप से सामाजिक अन्तः क्रिया की एक प्रक्रिया है।"
- **जॉन जी डार्ले** के अनुसार, "साक्षात्कार एक उद्देश्य पूर्ण वार्तालाप है।"
- **हेडर एवं लिण्डमैन** के अनुसार, "साक्षात्कार के सम्बन्ध में दो या अनेक व्यक्तियों के बीच वार्तालाप अथवा मौखिक उत्तर सम्मिलित होते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि साक्षात्कार वह व्यवस्थित प्रविधि है जिसमें अनुसन्धानकर्ता सम्बन्धित व्यक्ति या व्यक्तियों से स्वयं मिलकर बातचीत करके एवं उत्तर-प्रत्युत्तर द्वारा किसी विषय के बारे में वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करता है।

साक्षात्कार की विशेषताएँ

संक्षेप में साक्षात्कार पद्धति की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं

1. साक्षात्कार में दो पक्ष होते हैं।
2. दोनों पक्षों के बीच उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप होता है **गुडे एवं हाट** के अनुसार "मौलिक रूप से साक्षात्कार सामाजिक अन्तःक्रिया की एक प्रक्रिया है।"
3. यह वार्तालाप मुख्यतः आमने-सामने की स्थिति में किया जाता है।
4. साक्षात्कार का निश्चित उद्देश्य होता है जो मुख्य रूप से तथ्य संकलन है।
5. साथ ही साक्षात्कार एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी है।

साक्षात्कार के उद्देश्य

इसका प्रयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है; जैसे—संस्था में प्रवेश के लिए, नौकरी में चुनाव के लिए, किसी अधिकारी अथवा नेता से मिलने के लिए आदि।

- **लुण्डबर्ग** के अनुसार, साक्षात्कार, के दो प्रमुख उद्देश्य हैं
  (i) तथ्य संकलन
  (ii) उत्तरदाता के जीवन के भावात्मक पक्षों का अध्ययन।
- **मैकोबी** एवं **मैकोबी** के अनुसार, साक्षात्कार के निम्नलिखित उद्देश्य हैं
  (i) उपकल्पना की खोज
  (ii) तथ्य संकलन
  (iii) अन्य स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का सत्यापन
- **यंग** के अनुसार, साक्षात्कार के चार उद्देश्य हैं
  (i) उत्तरदाता के व्यक्तित्व सम्बन्धी सूचना प्राप्त करना
  (ii) उपकल्पना का निर्माण
  (iii) वैयक्तिक सूचना प्राप्त करना तथा
  (iv) द्वितीयक तथ्यों का संकलन
- **ब्लैक** एवं **चैपियन** के अनुसार, साक्षात्कार के उद्देश्य
  (i) विषय का विवरण देना एवं (ii) अन्वेषण करना है
- इन सब विद्वानों की राय के आधार पर साक्षात्कार के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं
  (i) उपकल्पना का निर्माण एवं समस्या का प्रारम्भिक अन्वेषण
  (ii) प्राथमिक तथ्यों का संकलन
  (iii) साक्षात्कार का तीसरा उद्देश्य पुनरीक्षण है।
  (iv) साक्षात्कार एक पूरक विधि भी है।

Scanned with CamScanner

साक्षात्कार के प्रकार

- **कार्यों के आधार पर** तीन प्रकार का होता है
  (i) निदानात्मक साक्षात्कार (ii) उपचारात्मक साक्षात्कार
  (iii) अनुसन्धान साक्षात्कार
- **मोजर** ने औपचारिकता के आधार पर दो प्रकार के साक्षात्कार बताए हैं
  (i) औपचारिक साक्षात्कार (ii) अनौपचारिक साक्षात्कार

इसी प्रकार मैकोबी एवं मैकोबी, सेल्टिज, जहोदा ने संरचना एवं प्रमाणिकता के आधार पर सभी प्रकार के साक्षात्कारों को मानकीकृत या संरचित तथा अमानकीकृत या असंरचित इन दो प्रमुख वर्गों में रखा है।

- **उत्तरदाताओं की संख्या** के आधार पर भी साक्षात्कार दो प्रकार का हो सकता है
  (i) व्यक्तिगत साक्षात्कार (ii) सामूहिक साक्षात्कार
- **औपचारिकता के आधार पर** दो प्रकार का होता है
  (i) औपचारिक साक्षात्कार (ii) अनौपचारिक साक्षात्कार
- **अध्ययन पद्धति के आधार पर** तीन प्रकार का होता है
  (i) अनिर्देशित साक्षात्कार (ii) निर्देशित साक्षात्कार
  (iii) पुनरावृत्ति साक्षात्कार

साक्षात्कार प्रक्रिया के प्रमुख चरण

(i) साक्षात्कार का प्रारम्भ एवं औपचारिकताएँ
(ii) साक्षात्कार की प्रारम्भिक तैयारी
(iii) उत्तरदाता से सम्पर्क एवं पूर्व-नियुक्ति
(iv) प्रश्न पूछना
(v) उपयुक्त एवं अर्थपूर्ण उत्तरों की प्राप्ति
(vi) आलेखन
(vii) समापन

साक्षात्कार पद्धति का महत्त्व, गुण या लाभ

(i) अधिक विस्तृत एवं गहन सूचनाओं का संकलन
(ii) लचीलापन
(iii) अधिक अर्थपूर्ण सूचनाएँ
(iv) अधिक प्रत्युत्तर दर एवं सहयोग
(v) स्मरण दिलाने एवं प्रेरित करने की सुविधा
(vi) तुरन्त एवं स्वाभाविक स्तर
(vii) संवेदनात्मक एवं नाजुक विषयों के बारे में जानकारी
(viii) अन्य विषयों के लिए एक पूरक विधि

साक्षात्कार के दोष एवं सीमाएँ

(i) खर्चीली विधि
(ii) अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रयोग कठिन
(iii) विशेष कुशलता एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता
(iv) मौखिक उत्तर पर अधिक विश्वास
(v) एकरूपता की कमी
(vi) प्रशिक्षित साक्षात्कारकर्ता का अभाव

इस प्रकार साक्षात्कार में लाभ भी हैं तो दोष भी इन दोषों को ध्यान में रखे पर उसमें कमी की जा सकती है जिससे साक्षात्कार ठीक प्रकार से हो सके।

Scanned with CamScanner

गुणात्मक विधियाँ
(Qualitative Method)

सहभागी अवलोकन
(Participant Observation)

अवलोकन को दो भागों में बाँटा गया है सहभागी और असहभागी अवलोकन

- **रीवर्स** ने इस (सहभागी अवलोकन) को गहन क्षेत्रीय कार्य कहा है।
- **पी वी यंग** के अनुसार, ''अनियन्त्रित सहभागी अवलोकनकर्ता सामान्यतः या उस समूह के साथ रहता है या उसके जनजीवन में भाग लेता है जिसका वह अध्ययन कर रहा है।''
- सहभागी अवलोकन को स्पष्ट करते हुए **गुडे** एवं **हाट** ने लिखा है कि ''इस कार्य प्रणाली का उस समय उपयोग किया जाता है जबकि अनुसन्धानकर्ता उस समूह के सदस्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है।
- **पी वी यंग** आदि ने सहभागी एवं असहभागी अवलोकन को अनियन्त्रित एवं असंरचित अवलोकन माना है।
- **पीटर मान** के अनुसार, ''सहभागी अवलोकन का तात्पर्य ऐसी दशा से है जिसमें अवलोकनकर्ता अध्ययन किए जाने वाले समूह का अत्यधिक घनिष्ठ सदस्य बन जाता है तथा उस समूह की सभी गतिविधियों में स्वयं भाग लेता है।''

इस तरह सहभागी अवलोकन वह विधि है जिसमें अवलोकनकर्ता अवलोकित समूह का सदस्य बनकर उनकी गतिविधियों में भाग लेता है और तथ्यों का संकलन भी करता है। **गुडे** एवं **हाट** ने कहा है- सहभागी अवलोकन के लिए समूह द्वारा स्वीकृति आवश्यक होती है। इसी प्रकार **सिनपाओ यंग** ने इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है कि ''सहभागी अवलोकनकर्ता एक बाहरी व्यक्ति होता है जो अस्थायी रूप से समूह का अन्दरूनी व्यक्ति बन जाता है।

सहभागी अवलोकन सम्भवतः सबसे कम संरचित विधि है तथा संकलन के लिए शोधकर्ता केवल अवलोकन ही नहीं करता, बल्कि काफी सूचनाएँ स्रोतों एवं विधियों से भी प्राप्त की जाती हैं इसीलिए **मैकाल** एवं **सिम्मोन्स** ने कहा है कि ''सहभागी अवलोकन तथ्य संकलन की एक विधि नहीं है बल्कि कई विधियों का सम्मिलित रूप है।''

*सहभागी अवलोकन शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **लिण्डमैन** ने सन् 1924 में अपनी पुस्तक Social Discovery में किया। इस प्रकार के अवलोकन में अवलोकनकर्ता समूह में इतना घुल-मिल जाता है कि वह अपनी व्यक्तिगत पृथकता की भावना को छोड़ देता है, हालाँकि यह अवलोकन का ही प्रकार है।*

सहभागी अवलोकन की विशेषताएँ

1. यह अनियन्त्रित, असंरचित एवं मुक्त विधि है।
2. सहभागी अवलोकन का उद्देश्य स्वाभाविक स्थिति में गहन एवं अन्दरूनी सूचनाएँ संकलित करना है।

Scanned with CamScanner

3. शोधकर्ता दो भूमिकाओं को समाहित करता है—एक वैज्ञानिक अवलोकनकर्ता की और दूसरी, अस्थायी सहभागिक की या स्वीकृत सदस्य की। इन्हें बाह्य एवं अन्दरूनी भूमिकाएँ भी कह सकते हैं।
4. तथ्य संकलन की दृष्टि से यह कई पद्धतियों एवं विधियों का मिश्रित रूप बन जाता है।

सहभागी अवलोकन के गुण

(i) गहन अध्ययन
(ii) स्वाभाविक स्थिति
(iii) समग्रात्मक दृष्टिकोण
(iv) अन्तर्दृष्टि प्रदान करना

सहभागी अवलोकन के दोष

(i) पूर्ण सहभागिता कठिन
(ii) स्तरीकृत समाज में कठिनाई
(iii) वस्तुनिष्ठता की समस्या
(iv) भूमिका संघर्ष
(v) अपरिचित मूल्य का लाभ नहीं
(vi) आलेखन की समस्या

सहभागी एवं असहभागी में अन्तर

- असहभागी अवलोकनकर्ता समूह की गतिविधियों में सहभागी पर्यवेक्षक की तरह भाग नहीं लेता।
- सहभागी अवलोकन में विषय-वस्तु का सम्पूर्णता में अध्ययन किया जा सकता है जबकि असहभागी अवलोकन में विशेष पक्ष से ही सम्बद्ध हो सकता है।
- असहभागी में अवलोकनकर्ता की तटस्थ भूमिका निभाता है जबकि सहभागी में दोहरी भूमिका-अवलोकनकर्ता एवं सहभागिक की भूमिका निभाता है।
- सहभागी अवलोकन के द्वारा समूह की गुप्त बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है जबकि असहभागी अवलोकन में यह जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती है।

वैयक्तिक अध्ययन

जब किसी व्यक्ति, संस्था अथवा समुदाय का अध्ययन विस्तृत रूप में किया जाता है तो इस प्रकार किए गए अध्ययन को वैयक्तिक अध्ययन कहा जाता है। यह पद्धति अत्यन्त प्राचीन अध्ययन पद्धति है और इस पद्धति के द्वारा अत्यन्त गहन अध्ययन करना सम्भव हो जाता है। वैयक्तिक अध्ययन पद्धति का व्यवस्थित रूप में सबसे पहले प्रयोग प्रसिद्ध समाजशास्त्री हरबर्ट स्पेन्सर ने किया था।

लीप्ले ने इस विधि से पारिवारिक आय-व्यय का विस्तृत अध्ययन किया था। इस प्रकार जब किसी अध्ययन में प्रत्येक इकाई का समग्र अध्ययन किया जाता है तो इसे व्यक्तिगत अध्ययन कहा जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन की परिभाषाएँ

- **अल्फ्रेड मार्शल** के अनुसार, ''यह सावधानीपूर्वक कुछ चुने हुए परिवारों के घरेलू जीवन के समस्त पहलुओं का गहन अध्ययन है।..... अपने सर्वोत्तम रूप में यह सभी से श्रेष्ठ है लेकिन सामान्य हाथों में यह अधिक अविश्वसनीय सामान्य निष्कर्षों को सुझाने का कार्य करती है।''
- **यंग** के अनुसार, ''वैयक्तिक अध्ययन किसी एक सामाजिक इकाई चाहे वह व्यक्ति हो या परिवार, संस्था, सांस्कृतिक समूह अथवा समुदाय के जीवन के अन्वेषण एवं विवेचन करने की पद्धति को कहते हैं।''
- **एफ एच गिडिंग्स** के अनुसार, ''वैयक्तिक अध्ययन में अध्ययन की इकाई एक व्यक्ति अथवा उसके जीवन की एक घटना, एक राष्ट्र या इतिहास का एक युग भी हो सकता है।''
- **बीसेंज** एवं **बीसेंज** के अनुसार, ''वैयक्तिक अध्ययन एक गुणात्मक विवेचना का रूप है जिसमें किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा संस्था का अत्यन्त सावधानी सहित तथा पूर्व अवलोकन किया जाता है।''
- **गुडे** एवं **हाट** के अनुसार, ''यह सामाजिक तथ्यों को संगठित करने का वह ढंग है जिससे अध्ययन किए जाने वाले विषय का एकात्मक स्वभाव का संरक्षण हो सके। तनिक भिन्न रूप में यह एक विधि है जिसमें सामाजिक इकाई को सम्पूर्णता माना जाता है।''

वैयक्तिक अध्ययन की विशेषताएँ

1. वैयक्तिक अध्ययन का सम्बन्ध समाजिक इकाई से है। यह सामाजिक इकाई (या केस) केवल व्यक्ति ही नहीं होता बल्कि कुछ भी हो सकता है।
2. वैयक्तिक अध्ययन में सम्मिलित इकाई या इकाइयाँ विशिष्ट एवं विचित्र भी हो सकती हैं लेकिन समान्यतया वे समग्र की प्रतिनिधि नहीं होती हैं।
3. वैयक्तिक अध्ययन केवल तथ्य-संकलन की प्रविधि नहीं है। बल्कि यह किसी इकाई के विभिन्न पक्षों के तथ्यों के संग्रह, संगठन एवं विश्लेषण करने की सम्पूर्ण विधि है।
4. वैयक्तिक अध्ययन का उद्देश्य इकाई का गहन एवं सर्वांगीण अध्ययन है।
5. प्राय: वैयक्तिक अध्ययन की विशेषता के रूप में गुणात्मक विश्लेषण का उल्लेख किया जाता है।

वैयक्तिक अध्ययन की आधारभूत मान्यताएँ

(i) मानवीय व्यवहार की मौलिक एकता
(ii) अध्ययन-इकाई का बहुमुखी स्वरूप
(iii) परिस्थितियों एवं उसके प्रभाव की पुनरावृत्ति एवं समानता
(iv) समय-तत्त्व का प्रभाव
(v) सामाजिक घटनाओं की जटिलता

वैयक्तिक अध्ययन की विधि या कार्यप्रणाली

वैयक्तिक अध्ययन विधि में विभिन्न चरण सामाजिक अनुसन्धान की प्रक्रिया के समान है

(i) समस्या की संक्षिप्त विवेचना
(ii) घटनाओं के अनुक्रम एवं कारकों के सम्बन्ध में तथ्य संग्रह
(iii) कारकों का विश्लेषण
(iv) उपकल्पना-परीक्षण, निष्कर्ष एवं सुझाव

वैयक्तिक अध्ययनों के प्रकार

सामान्यत: वैयक्तिक अध्ययन को दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जाता है जो कि निम्नलिखित हैं

(i) व्यक्ति का अध्ययन
(ii) समूह अथवा समुदाय का अध्ययन

वैयक्तिक अध्ययन में सूचना संकलन के स्रोत

- **प्राथमिक सूचनाएँ संकलन करने के लिए** इसके अन्तर्गत प्राथमिक सूचनाएँ संकलन करने के मुख्य स्रोत एवं उपकरण निम्नलिखित हैं
  (i) साक्षात्कार
  (ii) अनुसूची
  (iii) अवलोकन

Scanned with CamScanner

- **द्वितीयक सूचनाएँ संकलन के लिए** *इसके अन्तर्गत दो वर्ग हैं*
  (i) डायरियाँ तथा निजी-पत्र
  (ii) जीवन इतिहास

वैयक्तिक अध्ययन के गुण

(i) अति गहन अध्ययन
(ii) महत्त्वपूर्ण उपकल्पनाओं एवं प्रपत्रों का साधन
(iii) इकाइयों का वर्गीकरण व विभाजन
(iv) व्यक्तिगत भावनाओं एवं मनोवृत्तियों का अध्ययन
(v) सामग्री की सम्पूर्णता
(vi) विभिन्न अध्ययन प्रविधियों का प्रयोग
(vii) प्रारम्भिक अध्ययन में उपयोग

वैयक्तिक अध्ययन के दोष

(i) निदर्शन का अभाव
(ii) दोषपूर्ण रिकॉर्ड
(iii) दोषपूर्ण जीवन इतिहास
(iv) समय और धन की अधिक आवश्यकता
(v) अस्पष्ट एवं वैज्ञानिक विधि
(vi) पक्षपात की सम्भावना

अन्तर्वस्तु विश्लेषण

(Content Analysis)

अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि का विकास वर्ष 1926 में पत्रकारों की प्रेरणा से हुआ। प्रारम्भ में पत्रकारों द्वारा समाचार-पत्रों का अन्तर्वस्तु विश्लेषण करके अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले गए। इन विश्लेषणों में पद्धति शास्त्रीय परम्परा का नितान्त अभाव था। इसी कमी को दूर करके समाज वैज्ञानिकों ने अन्तर्वस्तु विश्लेषण को एक व्यवस्थित पद्धति के रूप में विकसित किया।

अन्तर्वस्तु विश्लेषण जिसे सामग्री विश्लेषण अथवा विषय विश्लेषण पद्धति भी कहा जाता है। द्वितीयक सामग्री विशेष रूप से लिखित सामग्री से सूचनाओं अथवा तथ्यों को संकलन करने की एक प्रमुख प्रविधि है। इस प्रविधि को आज सामाजिक अनुसन्धानों में अधिकाधिक अपनाया जा रहा है और इसीलिए आज इस प्रविधि का प्रयोग तथा महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। **कोलम्बिया विश्वविद्यालय** में 1920-1929 के दशक में ही पत्रकारिता (पत्रिका प्रकाशक) के स्कूलों में अन्तर्वस्तु विश्लेषण के लिए केन्द्रों की स्थापना की गई थी। वर्ष 1926 में **मेल्कोम विल्ली** और वर्ष 1930 में **जे एल वुडलैण्ड** ने इसकी सहायता से यह जानने का प्रयास किया कि अमेरिकी समाचार-पत्रों में विदेशी खबरों को कितना स्थान दिया जाता है। समय के व्यतीत होने पर आज अन्तर्वस्तु विश्लेषण को कम्प्यूटर से किया जाने लगा है। इस प्रविधि में कम्प्यूटर के प्रयोग से अधिक वैज्ञानिकता तथा अधिक तटस्थता आ गई है।

अन्तर्वस्तु विश्लेषण परिभाषाएँ

- **पॉलिंग यंग** के अनुसार, ''अन्तर्वस्तु विश्लेषण साक्षात्कारों, प्रश्नावलियों, अनुसूचियों तथा अन्य लिखित या मौखिक भाषा एवं अभिव्यक्तियों द्वारा प्राप्त अनुसन्धान तथ्यों के अन्तर्वस्तु का क्रमबद्ध, वस्तुनिष्ठता तथा परिमाणात्मक वर्णन हेतु अपनाई जाने वाली एक प्रविधि है।''
- **कीट राइट** के अनुसार, ''हम विश्लेषण एवं कोडिंग को परस्पर परिवर्तित अर्थों में व्यक्त करते हैं जो कि संकेतात्मक व्यवहार का वैषयिक, व्यवस्थित एवं मात्रात्मक अध्ययन करते हैं।''
- **करलिंगर** के अनुसार, ''वस्तु विश्लेषण दरों को मापने के लिए संचारों के व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ और मात्रात्मक ढंग से अध्ययन और विश्लेषण करने की पद्धति है।''
- **बर्नाड बेरेल्सन** के अनुसार, ''अन्तर्वस्तु विश्लेषण संचार के प्रकट अन्तर्वस्तु का वस्तुनिष्ठ, क्रमबद्ध तथा परिमाणात्मक वर्णन के लिए अपनाई जाने वाली एक अनुसन्धान प्रविधि है।''

उपरोक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि अन्तर्वस्तु विश्लेषण पद्धति किसी विषय के अध्ययन की वह विधि है जिसके माध्यम से क्रमबद्ध, वस्तुनिष्ठ, एवं परिमाणात्मक अध्ययन सम्भव हो जाता है। **पॉलिंग यंग** की परिभाषा से स्पष्ट होता है कि अन्तर्वस्तु विश्लेषण का सम्बन्ध भाषागत अभिव्यक्तियों द्वारा अनुसन्धान तथ्यों की अन्तर्वस्तु से होता है।

अन्तर्वस्तु विश्लेषण की विशेषताएँ

1. संचार सामग्री की प्रकृति का विवरण प्रस्तुत करना
2. अन्तर्राष्ट्रीय भिन्नताओं को प्रस्तुत करना
3. विकास क्रम का पता लगाना
4. विभिन्न संचार साधनों की तुलना करना
5. संचार वस्तु में उद्देश्य के विरोधी तथ्यों की छानबीन करना

अन्तर्वस्तु विश्लेषण के कारण

(i) प्रचार के ढंगों को ज्ञात करना
(ii) पाठ्य-पुस्तकों को पठनीय बनाना
(iii) साहित्यिक भिन्नता का आकलन
(iv) भाषा एवं साहित्य के मानदण्डों का पता लगाना

अन्तर्वस्तु विश्लेषण के विभिन्न स्तर अथवा प्रकार

आर के मर्टन तथा पाल एफ लेजरफेल्ड ने अन्तर्वस्तु विश्लेषण के निम्नलिखित छः प्रकार बताए हैं

(i) चिह्न गणना या पहचानना
(ii) चिह्नों का एक पक्षीय वर्गीकरण
(iii) मद अथवा भिन्न-भाग विश्लेषण
(iv) विषय अथवा प्रसंग-विश्लेषण
(v) संरचनात्मक विश्लेषण
(vi) प्रचार विश्लेषण

अन्तर्वस्तु विश्लेषण की प्रक्रिया

(i) समस्या निर्माण
(ii) जनसंचार के साधन का चयन
(iii) विश्लेषण की इकाई का चयन

Scanned with CamScanner

(iv) समस्या से सम्बन्धित सामग्री का चुनाव
(v) सामग्री का विश्लेषण
(vi) प्रतिवेदन या विज्ञप्ति लेखन

अन्तर्वस्तु विश्लेषण की उपयोगिता अथवा गुण

(i) भूतकालीन सामाजिक जीवन में अध्ययन में सहायक
(ii) वस्तुनिष्ठ अध्ययनों में सहायक
(iii) संचार सामग्री की प्रवृत्तियों के वर्णन में सहायक
(iv) विषय विकास अथवा प्रवृत्तियों के अध्ययन में सहायक
(v) संचार सामग्री में अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरों के अध्ययन में सहायक
(vi) संचार साधनों की तुलना में सहायक
(vii) प्रचार की प्रविधियों को ज्ञात करना
(viii) व्यक्तित्व के अध्ययनों में सहायक

अन्तर्वस्तु विश्लेषण की सीमाएँ एवं हानियाँ

(i) समग्र को परिभाषित करने की समस्या
(ii) जनसंचार साधनों का निदर्शन खोजना कठिन
(iii) वैषयिक और निष्पक्ष निष्कर्ष प्राप्त करना कठिन
(iv) समाचार-पत्रों की नीति का पता लगाना कठिन

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि अन्तर्वस्तु विश्लेषण प्रविधि को अनुसन्धान की अन्य प्रविधियों के पूरक रूप में अथवा व्यावहारिक निर्णय लेने के लिए भी प्रयोग में लाया जा सकता है।

मौखिक इतिहास

सामाजिक अनुसन्धान में गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रकार के सामग्री अथवा आँकड़ों का अपना अलग-अलग महत्त्व है। अनुसन्धान की समस्या की प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धानकर्ता एकत्र की जाने वाली सामग्री के बारे में निर्णय लेता है। गुणात्मक सामग्री एकत्र करने में चार प्रमुख प्रविधियाँ होती हैं—सहभागी अवलोकन, वैयक्तिक अध्ययन, जीवन इतिहास तथा अन्तर्वस्तु विश्लेषण, जबकि गणनात्मक सामग्री के संकलन में अवलोकन, प्रश्नावली, अनुसूची एवं साक्षात्कार जैसी प्रविधियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मौखिक इतिहास एवं वृतान्त ऐतिहासिक सामग्री को संकलित करने की एवं सुरक्षित रखने की प्रमुख पद्धतियाँ मानी जाती हैं। इन दोनों का प्रमुख आधार उन व्यक्तियों का अभिलिखित साक्षात्कार होता है। जिन्होंने भूतकालीन घटनाओं में सहभागिता की है अथवा जो पुरातन जीवन पद्धति का अनुभव रखते हैं। मौखिक इतिहास को ऐतिहासिक अनुसन्धान का सबसे प्राचीन स्रोत माना जाता है क्योंकि लिखित इतिहास की परम्परा काफी बाद में प्रारम्भ हुई है।

मौखिक इतिहास का अर्थ दो रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है

(i) यह गुणात्मक अनुसन्धान की एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्तिगत साक्षात्कार को आधार माना जाता है, जिससे भूतकालीन घटना से सम्बन्धित अर्थों, निर्वचनों एवं अनुभवों को समझा जा सके।
(ii) यह ऑडियो या वीडियो टेपरिकॉर्डर के रूप में स्वयं में एक उत्पादन है। अत: इसे एक मौलिक ऐतिहासिक प्रलेख माना जा सकता है जोकि आगामी अनुसन्धानों हेतु प्राथमिक सामग्री उपलब्ध कराने का कार्य करता है।

मौखिक इतिहास से सामग्री संकलित करने में कठिनाइयाँ

(i) सर्वप्रथम कठिनाई लोगों से सम्पर्क स्थापित करने से सम्बन्धित है। लोग कई बार अनुसन्धानकर्ता को सरलता से अपने जीवन के बारे में अथवा अपने अनुभव के बारे में बताने के लिए तत्पर नहीं होते हैं। उचित प्रकार का सम्पर्क इस प्रकार के कार्य में सहायक हो सकता है।
(ii) दूसरी कठिनाई सम्बन्धित व्यक्तियों द्वारा दी गई सूचना की विश्वसनीयता के बारे में है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि वे सूचनाओं अथवा अपने अनुमानों को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हैं, जिससे सूचनाओं की विश्वसनीयता सन्देहजनक हो जाती है।
(iii) तीसरी कठिनाई विभिन्न प्रकार के परिप्रेक्ष्यों में समन्वय स्थापित करने की है। अनुसन्धानकर्ता को इस प्रकार की गुणात्मक प्रविधियों के प्रयोग करने से पहले विभिन्न सामाजिक विज्ञानों के परिप्रेक्ष्यों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है। जो सामग्री उसे इन विभिन्न परिप्रेक्ष्यों द्वारा प्राप्त होती है, उसका क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण भी एक समस्या बन जाता है।
(iv) सूचनादाता एवं अनुसन्धानकर्ता की भूमिकाओं में समन्वय रखना तथा व्यक्तिगत पक्षपात को नियन्त्रित करना मौखिक इतिहास जैसी प्रविधियों के प्रयोग में आने वाली चौथी प्रमुख कठिनाई है।
(v) सूचनादाता एवं अनुसन्धानकर्ता में इन प्रविधियों द्वारा सामग्री संकलित करने हेतु स्थापित सम्पर्क एवं संकलित सूचना से सम्बन्धित एक अन्य कठिनाई नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मौखिक इतिहास आज का नहीं, यह सदियों पुरानी तथ्य संकलन की विधि है। इसी से मिलती-जुलती एक और प्रविधि है जिसे हम वृत्तान्त कहते हैं। जो समस्याएँ मौखिक इतिहास के सम्बन्ध में कही जा सकती हैं, वही समस्याएँ वृत्तान्त के बारे में भी कही जा सकती हैं। ऐतिहासिक युग में अब कोई और सुविधा नहीं थी तो लोग मौखिक रूप से ही याद करते थे और आवश्यकता पड़ने पर उनको बता भी देते थे।

जीवन इतिहास (Life History)

जीवन इतिहास का तात्पर्य विस्तृत आत्मकथा से है। यह किसी व्यक्ति द्वारा स्वयं के बारे में लिखी गई आत्मकथा है अथवा किसी अन्य अन्वेषक द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में लिखी गई जीवनी है। तथ्य-संकलन के द्वितीयक स्रोत के रूप में जीवन इतिहास का काफी महत्त्व है।

जॉन मैज के अनुसार, "सीमित अर्थ में जीवन इतिहास का अभिप्राय विस्तृत आत्मकथा से है। परन्तु व्यवहार में इसका सामान्य प्रयोग मोटे रूप से किसी भी जीवन सम्बन्धी सामग्री के लिए किया जाता है।" अधिकांश जीवन इतिहास महान् व्यक्तियों द्वारा स्वयं अपने बारे में अथवा अन्य लोगों द्वारा उनके बारे में लिखे जाते हैं।

जीवन इतिहास के मुख्यत: दो रूप देखने को मिलते हैं पहला आत्मकथा जिसे व्यक्ति अपने सम्बन्ध में स्वयं लिखता है तथा दूसरा **जीवन चरित्र** जिसे कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की जीवनसम्बन्धी घटनाओं के बारे में लिखता है।

फैस्टिंगर एवं **कैटज** जैसे विद्वानों ने डायरियों को भी जीवन इतिहास की श्रेणी में सम्मिलित किया है तथा उन्हें अनुसन्धान में प्रयोग किया जाने वाला महत्त्वपूर्ण प्रलेख माना है। डायरियों का प्रयोग अनेक इतिहासकारों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों द्वारा किया गया है। सांस्कृतिक मानवशास्त्रियों ने अपने अध्ययनों में मौखिक आत्मकथाओं का प्रयोग किया है तथा क्लकोहन ने इसे निष्क्रिय साक्षात्कार कहा है।

Scanned with CamScanner

जीवन इतिहास के प्रकार

सामाजिक अनुसन्धान में जीवन इतिहास के अनेक प्रकारों का प्रयोग किया जाता है जिनमें से प्रमुख हैं

(i) **स्वतः लिखित आत्मकथा** यह व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से अपने बारे में लिखी जाती है।

(ii) **प्रेरित आत्मलेख** यह व्यक्ति अपने बारे में परन्तु अन्य व्यक्तियों से प्रेरित होकर लिखता है।

(iii) **मौखिक जीवन इतिहास** इस प्रकार का जीवन इतिहास किसी अन्वेषक द्वारा किसी व्यक्ति से उसके जीवन से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त कर तैयार किया जाता है इसी को क्लकोहन ने निष्क्रिय साक्षात्कार द्वारा तैयार की गई जीवनी कहा है।

(iv) **संकलित जीवन इतिहास** यह कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की जीवन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करके, उसके द्वारा कही गई बातों का पता लगाकर तैयार करता है।

जीवन इतिहास के उपयुक्त क्षेत्र

कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें जीवन इतिहास प्रविधि सबसे अधिक उपयोगी है। इसका प्रयोग निम्नलिखित परिस्थितियों में किया जा सकता है

(i) गहन एवं सूक्ष्म अध्ययनों में
(ii) गुणात्मक तथ्यों के संकलन में
(iii) परिवर्तन एवं विकास के अध्ययन में
(iv) व्यक्तित्वों के अध्ययन में
(v) आन्तिरक जीवन के अध्ययन में

जीवन इतिहास के प्रमुख पहलू

सामाजिक अनुसन्धान में जीवन इतिहास प्रविधि का प्रयोग करते समय अनेक बातों अथवा पहलुओं का ध्यान रखना होता है **जॉन डोलाई** ने जीवन इतिहास के प्रयोग में निम्नलिखित पहलुओं की खोज को महत्त्वपूर्ण माना है

(i) जिसका इतिहास लिखा जा रहा है वह किस संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है?

(ii) जीवन इतिहास से सम्बन्धित व्यक्ति के जीवन पर उसके परिवार का क्या प्रभाव पड़ा है?

(iii) जीवन इतिहास से सम्बन्धित व्यक्ति के बचपन से लेकर वर्तमान समय तक के उसके जीवन को सुन्दर ढंग से लिखा जाना चाहिए।

(iv) जीवन इतिहास से सम्बन्धित व्यक्ति को विशेष कार्य हेतु किन सामाजिक कारकों ने प्रेरित किया है उनकी सावधानीपूर्वक जाँच की जानी चाहिए।

(v) जीवन इतिहास से सम्बन्धित व्यक्ति के बारे में एकत्रित तथ्यों को व्यवस्थित ढंग से रखा जाना चाहिए।

जीवन इतिहास के गुण

(i) गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन
(ii) व्यक्तित्व सम्बन्धी पूर्ण ज्ञान
(iii) व्यक्तिगत अनुभव में वृद्धि
(iv) दीर्घकालीन घटनाओं एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन

जीवन इतिहास के गुणों के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन किया जा सकता है, जैसे—किसी डाकू, हत्यारे, साधू, विधवा, अपराधी या बाल अपराधी, समाज सुधारक या अन्य रूप में महत्त्वपूर्ण प्रतीत होने वाले किसी भी व्यक्ति के जीवन इतिहास को तैयार किया जा सकता है।

जीवन इतिहास के दोष

यद्यपि जीवन इतिहास व्यक्तित्व के गहन एवं सूक्ष्म अध्ययन में अति उपयोगी प्रविधि है फिर भी इसका सामाजिक अनुसन्धानों में सीमित पैमाने पर ही प्रयोग किया जाता है। यह प्रविधि अन्य प्रविधियों की तरह दोषरहित नहीं है। इसके दोष या अवगुण निम्नलिखित हैं

(i) अस्पष्ट तथा अवैज्ञानिक
(ii) सीमित अध्ययन
(iii) दोषपूर्ण सामान्यीकरण
(iv) पक्षपात
(v) अप्रमाणित तथ्य
(vi) अत्यधिक आत्म-विश्वास

उपरोक्त दोषों के बावजूद, जीवन इतिहास व्यक्तियों के सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विधि है। मनोचिकित्सा में इसका विशेष महत्त्व है। दोषों का यदि हम मूल्यांकन करें तो यह भी स्पष्ट होता है कि सभी दोष प्रविधि के ही नहीं हैं, अपितु कुछ दोष इसे प्रयोग करने वाले अनुसन्धानकर्ता के भी हैं, जिन्हें कुछ सावधानियों द्वारा दूर किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner